OM -20- 2018 DELHI_Page 1 and 2 12/28/2018 12:39 PM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -19 अंक -20 जनवरी-II-2019 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. -10.00

आध्यात्मिकता ही पैदा करती है सकारात्मक सोच

कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए दादी जानकी, माननीय मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर, क्षेत्रीय निदेशक ब्र.कु. अमीरचंद तथा अन्य।

सोनीपत-हरियाणा। माननीय मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि आध्यात्मिक सोच से जीवन में सकारात्मकता पैदा होती है और यही सकारात्मकता जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। उसी के बल पर ही एक अच्छे समाज का निर्माण किया जा सकता है। ब्रह्माकुमारीज़ इस कार्य को बखूबी कर रहा है और समाज

राजयोगिनी दादी जानकी व माननीय मुख्यमंत्री ने किया 'दादी जानकी ऑडिटोरियम' का उद्घाटन

में अपने आध्यात्मिक चिंतन के ज़रिए सकारात्मकता का संदेश देते हुए अच्छी सोच पैदा कर रहा है। वे सोनीपत जिले के गांव नांगल खुर्द के ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र के पाँचवें वार्षिकोत्सव में सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने 103 वर्षीय दादी जानकी की उपस्थिति में 'दादी जानकी ऑडिटोरियम' का भी उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि संस्था एक ईश्वर-एक परिवार की सोच के तहत कार्य कर रही है और पूरे विश्व को एक परिवार के तौर पर मानते हुए आगे बढ़ रही है

ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका 103वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि आज मनुष्य भाग-दौड़ करते हुए अपने आप को भूल गया है। परिणामस्वरूप वो चिंता व अवसाद का शिकार बन रहा है। हमारे जीवन का लक्ष्य हम कौन हैं, हमें क्या करना चाहिए और हमारा सम्बंध किससे हो, इससे जुड़कर आगे बढ़ना है। उन्होंने आगे कहा कि मैंने परमात्मा के संदेश को सारे विश्व में फैलाने के लिए चालीस वर्ष तक भ्रमण किया और परमात्मा का कार्य ट्रस्टी होकर किया।

इस अवसर पर शहरी स्थानीय निकाय,महिला एवं बाल विकास मंत्री कविता जैन, सांसद रमेश कौशिक, ब्रह्माकुमारीज़ पंजाब रीज़न के चीफ ब्र.कु. अमीरचंद, पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के जस्टिस ए.के. जिंदल, उपायुक्त विनय सिंह, एस.पी. प्रतीक्षा गोदारा, ए.डी.सी. जयबीर सिंह आर्य, एस.डी.एम. प्रशांत पंवार सहित सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

गीता - श्रेष्ठ जीवन पद्धति का ग्रन्थ

दादी जानकी के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. वीणा, ब्र.कु. उषा व गीता के विद्वान जन।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। गीता में वर्णित युद्ध वास्तव में मानव के अंदर चलने वाले द्वन्द्व का प्रतीक है। उक्त विचार श्रीकृष्णा आश्रम हरिद्वार से आये स्वामी हरिओम गिरी जी महाराज ने 'त्रिदिवसीय अखिल भारतीय गीता महासम्मेलन' में व्यक्त किये। स्वामी जी ने कहा कि गीता हमें जीवन जीने की कला सिखाती है। गीता मानव को उसके सत्य स्वरूप का बोध कराती है।

सिद्धपीठ श्री मंगला काली मंदिर,हरिद्वार से आये स्वामी विवेकान्द जी ने कहा कि गीता का उद्देश्य हमें अध्यात्म के शिखर पर ले जाना है। गीता का सार ही है कि परमात्मा ही सत्य है और सत्य ही शिव है।

ऋषिकेश से आये स्वामी ईश्वरदास जी महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था वास्तव में गीता को जीवन में उतारने का एक बेहतर कार्य कर रही है।

ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि गीता पढ़ना और सुनना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन गीता को जीवन में लाना सबसे महत्वपूर्ण है। जब हम अपने जीवन को गुणों से भर देते हैं, तो हमारा जीवन ही गीता बन जाता है।

ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि आध्यात्मिक सत्ता ही सर्वोपरि है। आध्यात्मिक सत्ता के कारण ही आज तक भारत विश्व गुरू कहलाता है।

संस्था के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि गीता ज्ञान की वास्तविकता को लोगों के सामने लाना ही हमारा उद्देश्य है। गीता ज्ञान परमात्मा ने किसी हिंसा के लिए नहीं, बल्कि श्रेष्ठ धर्म की स्थापना के लिए दिया, और धर्म का मूल तो अहिंसा ही है।

माउण्ट आबू से आयीं वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. उषा ने कहा कि किसी भी शरीरधारी को परमात्मा नहीं कह सकते। परमात्मा को हम सत्य अथवा अविनाशी कहते हैं, जबकि शरीर तो विनाशी है। इसलिए गीता का ज्ञान स्वयं परमात्मा शिव ने दिया। शिव को ही हम सत्यम शिवम सुन्दरम कहते हैं।

शिवयोगी धाम,हरिद्वार के संस्थापक स्वामी शिव योगी जी महाराज ने कहा कि गीता का महत्व तभी है जब हम उसे जीवन में आत्मसात करें। गीता वास्तव में श्रेष्ठ जीवन पद्धति का ग्रन्थ है।

हैदराबाद से आये स्वामी गोपाल कृष्णानंद जी महाराज ने कहा कि जिस दिन हम गीता के रहस्य को समझ लेंगे, उस दिन जीवन समझ में आ जायेगा। गीता की असली आवश्यकता तो इस समय है।

साध्वी विजय लक्ष्मी ने कहा कि परमात्मा के निकट आने के लिए प्रेम भाव ज़रूरी है। जितना हम प्रेम और शान्ति से भरपूर होंगे, उतना ही स्वयं को ईश्वर के करीब महसूस करेंगे।

हैदराबाद उच्च न्यायालय के पूर्व चीफ जस्टिस वी. ईश्वरैय्या ने कहा कि गीता को समझने के लिए पहले हमें खुद को समझना होगा। गीता का ज्ञान सिर्फ पढ़ने से समझ नहीं आता, बल्कि आध्यात्मिकता को अपनाने से समझ आता है।

राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि स्व-चिंतन और स्वाध्याय, यही जीवन को संयमित और दृढ़ बनाते हैं। गीता भी हमें इन्द्रियों के संयम का ज्ञान देती है।

सम्मेलन को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. श्रेयांस द्विवेदी, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के सह-प्राध्यापक डॉ. एस.एम. मिश्रा, गीता शोध विद्वान ब्र.कु. त्रीनाथ, भगवद्गीता विदुषी डॉ. पुष्पा पाण्डे, ब्र.कु. वीना, गीता शोध विद्वान बसवराज आदि अनेक विद्वान वक्ताओं ने सम्बोधित किया।

त्रिदिवसीय गीता महासम्मेलन का सफल आयोजन

- त्रिदिवसीय सम्मेलन में गीता की वास्तविकता को लिये हुए कई विषयों पर हुईं गोष्ठियां और परिचर्चायें
- कई विद्वान जनों ने गीता के सत्य स्वरूप और हमारे जीवन के साथ उसका सम्बंध पर गहराई से की चर्चा
- गीता वास्तव में श्रेष्ठ जीवन पद्धति का ग्रन्थ
- गीता की असली आवश्यकता आज के परिदृश्य में

आधुनिक विकास में खो गई मन की शांति - ब्र.कु. सूर्य

तनाव मुक्त राजयोग शिविर का सफल आयोजन

दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. गीता तथा अतिथिगण।

फर्रुखाबाद-एस.एन.बी.। ब्रह्माकुमारीज़ के बीबीगंज सेवाकेन्द्र द्वारा के.डी. बालिका डिग्री कॉलेज में आयोजित त्रिदिवसीय 'तनाव मुक्त राजयोग शिविर' में माउण्ट आबू से आये राजयोगी ब्र.कु. सूर्य ने कहा कि आज व्यक्ति खुद के दुःख से दुःखी नहीं, परंतु दूसरों के सुख से दुःखी है। उन्होंने कहा कि तनाव का मुख्य कारण भाग दौड़ भरी जिन्दगी है। मानव ने तमाम विकास कर लिया, बुद्धिमान बन गया, परंतु सद्बुद्धि वाला नहीं बन पाया। उसके मन की शक्ति खो गई। जिसके अंदर अहम की भावना उत्पन्न हो जाती है, उसका पतन शीघ्र हो जाता है।

माउण्ट आबू ये आयीं वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिक ब्र.कु. गीता ने कहा कि तनाव जैसी बीमारी हर मनुष्य के मन में घर कर चुकी है। इससे मुक्त रहने का सहज साधन है कि अगर हम गलती करें तो तुरंत क्षमा मांग लेनी चाहिए। इससे मन तनाव मुक्त होता है।

सुनहरी मस्जिद के इमाम सदाकत हुसैन ने कहा कि हम दूसरों के घरों को न देखें, अपने घरों को देखें तो हम तनाव मुक्त बन सकते हैं।

इस मौके पर व्यापारी नेता अरुण प्रकाश तिवारी दद्दुआ, ईश्वर दास शिवानी, रजनी लौंग वानी, ज्ञानी गुरु वचन सिंह ने भी अपने विचार रखे। इसके पश्चात् सुरेश गोयल ने सभी का आभार व्यक्त किया। ब्र.कु. मंजू ने अतिथियों का स्वागत किया। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. सोनी ने किया। ब्र.कु. गिरजा, राधिका व सोनी ने नृत्य प्रस्तुत किया तथा ब्र.कु. मनीष व संदीप ने गीत की प्रस्तुति दी।

संसार को प्रभुमय देखने से होगा स्वर्णिम युग

संसू-अयोध्या। संसार को प्रभुमय देखने से स्वर्णिम युग की वापसी संभव है। उक्त विचार जगद्गुरू रामानंदाचार्य स्वामी रामदिनेशाचार्य जी ने तुलसी उद्यान में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'मूल्यों और अध्यात्मिकता द्वारा स्वर्णिम युग की वापसी' विषयक गोष्ठी में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि जैसी दृष्टि महात्मा भरत की थी, जिनके लिए जगत आराध्य का ही स्वरूप बन गया था और विरोध के लिए कुछ बचा नहीं था, आज भी इस स्वप्न को साकार करना कठिन नहीं है। अयोध्या और ब्रह्माकुमारीज़ की यही बुनियाद है, उनके लिए कोई विरोधी नहीं है और जिस दिन हम सभी में उस एक का वास देखने लगेंगे, उसी दिन हम स्वर्णिम युग के निर्माता होंगे। गोष्ठी के विशिष्ट वक्ता तिवारी मंदिर के महंत गिरीशपति त्रिपाठी ने कहा कि राम नाम ऐसा रसायन है, जिससे हम रामराज्य के अनुरूप मूल्य और आध्यात्मिकता से सज्जित हो सकते हैं। रसिक पीठाधीश्वर महंत जन्मेजयशरण जी ने कहा कि प्रेम वह चेतना है, जो स्वर्णिम युग की संभावना प्रशस्त करती है। महंत अवधेश दास ने कहा कि मानवीय मूल्यों का ह्रास आध्यात्मिक शक्ति से ही रोका जा सकता है।

गोष्ठी के दौरान मंच पर ब्र.कु. शीलू, क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. विद्या तथा संत महात्मायें।

माउण्ट आबू की वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. शीलू ने कहा कि समस्या स्वयं का ज्ञान न होने और परमात्मा से पहचान न होने के कारण है। उस एक में मन लगेगा तो हम सभी एक हो जाएंगे।

गोष्ठी में महंत वैदेहीवल्लभशरण, संत करपात्री, बड़ा भक्तमाल के महंत अवधेशदास आदि संतों से सम्बोधित किया।

OM -20- 2018 DELHI_Page 1 and 2 12/28/2018 12:39 PM Page 2

रात्रियों में शिवरात्रि विशेष क्यों ?

यूं तो हर चौबीस घंटे में एक रात्रि आ ही जाती है। परंतु भारतीय जन जीवन में रात्रि का विशेष महत्व है। वो है शिवरात्रि, नवरात्रि और दीपावली-दीपरात्रि। यहां हम विशेष रूप से इस बात पर विचार करेंगे कि वर्ष भर में तीन सौ बासठ या तीरेसठ रात्रियों में से शिवरात्रि में क्या अंतर है, जिसके कारण उनका महत्व न होकर शिवरात्रि को एक त्योहार के रूप में अथवा एक पवित्र रात्रि के रूप में और वरदान देने वाली रात्रि के तौर पर मनाया जाता है? क्या कारण है कि अन्य रात्रियों को लोग सो जाते हैं, जबकि शिवरात्रि के अवसर पर वे किसी भी तरह जागने का प्रयत्न करते हैं? यहां तक कि किसी एक भक्त को नींद आने लगे तो उसके दूसरे साथी उसे इस भाव से जगा देते हैं कि कम से कम इस पवित्र रात्रि को तो निद्रा रूपी पाप करने का भागी न बने!

- ब्र. कु. गंगाधर

क्या कारण है कि हर रात्रि को निद्रा करना स्वाभाविक माना जाता है और यदि किसी को नींद ना आये तो भी नींद की गोली देकर भी जैसे तैसे सुलाने का यत्न किया जाता है। और अन्य किसी सोये हुए को जगाना निषेध माना जाता है। जबकि शिवरात्रि पर स्वयं भी जागृत रहने और दूसरों को भी जागृत बनाये रखने ही का पुरुषार्थ किया जाता है। इस अवसर पर भला क्यों ये कोशिश की जाती है कि रात भर आँख खुली ही रहे और आलस्य अथवा तमोगुण पास ना आये?

इस बात पर विचार करने के लिए पहले ये देख लेना उचित होगा कि सामान्य तौर पर हर रात्रि को जब मनुष्य सो जाता है तो उस निद्रा की अवस्था में उसकी तीन या चार ऋणात्मक 'नेगेटिव' अवस्था होती है। पहला, उस समय वह स्वयं की सुध बुध भूले हुए होता है, मानो कि वह एक 'जीते हुए शव' के समान होता है। दूसरा, सुषुप्त अवस्था में वह तमोगुण अथवा आलस्य के अधीन होता है। तीसरा, निद्रा की अवस्था में कर्म न होने से उसकी कमाई रुक जाती है। और यदि उसके अतिरिक्त उसकी चौथी अवस्था को गिनें, तो वह प्रायः वह इस दुःखमय संसार ही का स्वप्न ले रहा होता है। जिसे कि मनोविज्ञानवेत्ता उसके अर्धचेतन में उसकी सुषुप्त तृष्णाओं की अभिव्यक्ति मानते हैं। और जिसे आध्यात्मिक दृष्टि से उसके अपने किन्हीं पूर्व कर्मों का सूक्ष्म प्रालब्ध भोग भी कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त कुछ लोग तो ऐसे भी होते हैं, जो रात्रि को घृणित कर्म करके पाप के भागी भी बनते हैं। परंतु निश्चित ही शिवरात्रि इन सभी दोषों से रहित शुभ रात्रि होती होगी, तभी तो इसे आध्यात्मिक दृष्टिकोण से लोग महत्वपूर्ण मानते हैं।

हम देखते भी हैं कि शिवरात्रि के अवसर पर भक्तजन कोशिश करते हैं कि पहला, वे अपनी सुध बुध ना भूलें, अर्थात् वे इस समय सचेत रहते हैं कि वे विश्वनाथ बाबा, एकलिंग महाराज, शिव बाबा के बच्चे आत्मा हैं। दूसरा, इस चेतना द्वारा तथा उपवास द्वारा वे आलस्य, निद्रा तथा तमोगुण से दूर रहने का यत्न करते हैं ताकि उनमें सतोगुण का उद्रेक हो। तीसरा, इस प्रकार से इस पुरुषार्थ द्वारा वे भविष्य के लिए कमाई करते हैं अथवा वरदानों को प्राप्त करने का यत्न करते हैं। और चौथा, वे भोगों की इच्छाओं को शान्त करते हैं। पाँचवा, वे शिवरात्रि पर विकर्मों से बचकर रहते हैं।

जैसे एक तो यह परंपरा कथित है कि पहला, जो दिन जिस महानात्मा के जन्म से सम्बंधित होता है, उस दिन को उसी के नाम से जोड़ दिया जाता है। उदाहरण के तौर पर श्रीराम के जन्म के दिन को रामनवमी, श्रीकृष्ण के जन्म दिन को जन्माष्टमी और गांधी के जन्म के दिन को गांधी जयंती कहा जाता है।

दूसरा, इसके पूर्व काल में जिस दिन कोई विशेष वृत्तांत हुआ हो, तो उस वृत्तांत के साथ उस दिन का भी नामांकन हो जाता है। उदाहरण के तौर पर हर वर्ष पंद्रह अगस्त को स्वतंत्रता दिवस और छब्बीस जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। तीसरा, जिस व्यक्ति के जिस कार्य को सर्वाधिक मुख्यता देनी हो, उसके जन्मदिन को भी कार्य अथवा व्यवसाय का नाम दे दिया जाता है। उदाहरण के तौर पर डॉ. राधाकृष्णण जी के जन्मदिन को अध्यापक दिवस के रूप में मनाया जाता है। चाचा नेहरू जी के जन्म दिन को बालदिवस के रूप में मनाया जाता है।

चौथा, जिस समस्या की ओर जन जन का विशेष ध्यान खिंचवाना हो, जिस वर्ग या कार्य की ओर लोगों का विशेष ध्यान खिंचवाना हो, उससे भी उस दिन अथवा वर्ष का नाम जोड़ दिया जाता है। उदाहरण के तौर पर एक मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है। कई बार नगर निगम अपने नगर में सफाई की ओर ध्यान खिंचवाने के लिए सफाई सप्ताह भी मना लेते हैं।

अब जानना यह है कि 'शिवरात्रि' का ऐसा नाम क्यों हुआ! उपरोक्त चारो प्रकार के कारणों में से कौन सा कारण उसके नामांकन का कारण बना?

ध्यान देने पर आप इस निर्णय पर पहुंचेंगे कि इन चार कारणों में से ही इसका ऐसा नामांकन हुआ। 'शिव' परमात्मा का नाम है और शिव शब्द कल्याण का भी वाचक है। चूंकि यह त्योहार परम आत्मा शिव के दिव्य जन्म के स्मरणोत्सव के रूप में मनाया जाता है, इसलिए भी इसका नाम 'शिवरात्रि' है। चूंकि परमात्मा शिव के कार्य के फलस्वरूप विश्व का कल्याण हुआ, अतः इन मुख्यतः वृत्तांत के कारण ही इसका यह नाम हुआ और चूंकि परमात्मा शिव सभी मनुष्यात्माओं का ध्यान, अज्ञान निद्रा को छोड़, पवित्रता का महाव्रत ले, अपना कल्याण करने की ओर खिंचवाते हैं, इसलिए इसका नाम शिवरात्रि हुआ।

व्यर्थ को छोड़ पहले स्वयं पर रहम करो, फिर दूसरों पर

अकेले होते भी अनेकों के साथ मिलकर अगर चलते हैं तो कोई मुश्किल नहीं है। कोई कहता है कि बड़ा मुश्किल है तो मुझे दया आती है कि यह सिर्फ कहता है, पर करता कुछ नहीं है। हमेशा रोता रहता है। किसी की बात को समझने के लिए बड़ी दिल हो, क्योंकि आजकल कोई किसी की बात को समझने की कोशिश नहीं करता है। मुस्कुरा तभी सकते हैं जब बड़ी बात को छोटा बनाना आता है, छोटी को बड़ा नहीं बनाओ। जो खुद ही बड़ा बनाता है वह औरों पर क्या दया करेगा! उसका माइंड बेचारा एक मिनट भी शान्त नहीं होता है। दिल में एक मिनट के लिए भी किसी के प्रति प्यार नहीं पैदा होता है। मन में शान्ति, दिल में प्यार हो। उसके लिए ऐसी बातों को समझ के पहले अपने ऊपर रहम करो। दया, रहम, कृपा, आशीर्वाद, इनसे भी सूक्ष्म सकाश है। तो जिसके पास सुख होगा, वो देने बिगर रह नहीं सकेगा। न दुःख देना, न लेना इसको कहा जाता है दया, रहम, कृपा की। प्रैक्टिकली अनुभव जो है वो औरों को सुख देता है। इसके लिए अपने मन को अन्दर से सच्चाई, प्रेम, खुशी से शक्तिशाली बनाओ, खुद को प्यार करो। कइयों को खुद को प्यार करने के लिए टाइम नहीं है, तो औरों को कैसे प्यार करेंगे, इसलिए पहले मैं खुद को प्यार करूँ।

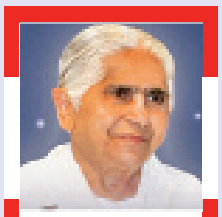
दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

परमात्मा बाप ने शिक्षाओं को धारण करने के लिए जो शक्ति दी है, उससे जो न काम की बात है वो अन्दर नहीं जाती। बाहर की बात अन्दर न जावे - यह है अपने से प्यार करना, अपने पर दया करना। अगर सुबह से लेके यह बात...वह बात है...तो वो क्या दया करेगा? अरे, मेरा धर्म है शान्त रहना। सच्चाई और प्रेम से सबको रिगार्ड देना, रिस्पेक्ट देना, इससे औरों के मन में आपके प्रति रिगार्ड पैदा होगा। पहले परिवर्तन का रिकॉर्ड अच्छा हो। हमारा काम है सेल्फ रिस्पेक्ट में रहना, सबको रिस्पेक्ट देना। छोटों को स्नेह दो, बच्चे बेचारे क्यों ऐसे नाराज़, दुःखी रहते हैं क्योंकि बच्चों को बचपन से ले करके माँ बाप का स्नेह नहीं मिलता है। भाई-बहनों का प्यार नहीं मिलता है। छोटे बच्चों में भी ईर्ष्या होती है, मम्मी इसको ज़्यादा प्यार करती, मेरे को नहीं। इसके लिए अपने को ठीक से टाइम दो, इसमें एक्स्ट्रा समय देने की बात नहीं है या इसमें टाइम लगने की भी बात नहीं है। सिर्फ समय को यथार्थ सफल करने की बात है। शान्त रहने के लिए बीच में कोई पुरानी बात याद न आवे, तो वो वाइब्रेशन्स बड़े पॉवरफुल होते हैं, जिससे कदम-कदम पर सावधान रहने की समझ मिली है, उनके प्रति सम्मान दिल से निकलता है। और कोई कहे कि यह भी ऐसे करता है या ऐसे किया है, तो यह है डिसरिगार्ड। जिसको जो कहना व करना है करे, पर मैं शान्ति और प्रेम नहीं छोडूँ। ऐसे नहीं क्या बोलती हो! तो इसमें हर बात एक्सेप्ट करो, एक्सपेक्ट नहीं करो। मैं किसी के लिए कुछ एक्सपेक्ट करूँ और वो कुछ करे तो मैं सेल्फ रिस्पेक्ट में नहीं रह सकूंगी। सेल्फ रिस्पेक्ट में रहने के लिए बहुत अच्छा मटेरियल है, उसको यूज़ करो तो खुशी जैसे खुराक के मुआफिक काम करती है। आजकल देखा गया है ईर्ष्या वश सुखी को देख सहन नहीं करते, दुःखी को मदद नहीं करते। सारे विश्व में इस प्रकार का व्यवहार हो कि इन्सान की दुःख, अशान्ति, हिंसा चली जाये। इसके लिए जो सुख हमने पाया है वह वाइब्रेशन्स सब तक पहुँचे। बुद्धि बेहद में हो, कोई मनी मान की भूख नहीं है। मुझे मनी मिले, मान मिले तो वह निष्काम सेवाधारी नहीं है। सेवाधारी माना सच्ची दिल, बड़ी दिल। रिटर्न क्या दे रहे हैं, ऐसा ख्याल व कोई एक्सपेक्ट नहीं करना है। परन्तु यह भी बाबा ने बताया है बच्चे, तुम सेवा करते चलो, आखिर जिसके सामने कोई परीक्षा आती है तो यही घड़ी याद आयेगी, यह संगठन याद आयेगा। उसमें पेशेन्स, पीस, लव प्रैक्टिकली लाइफ में हो।

कन्ट्रोलिंग पॉवर द्वारा जैसा समय वैसा स्वरूप

अपना सतयुगी स्वरूप अनुभव कर रहे हो ना! यहीं बैठे रहे या अनुभव किया? क्योंकि जैसा समय वैसा स्वरूप चेंज करना आना चाहिए। ऐसे नहीं गीत बज रहा है डांस का और मैं छुप रही हूँ, ये नहीं हो। जैसा समय वैसा रूप धारण करना चाहिए क्योंकि सभा में रौनक तभी आती है जब सब एकमत हों, तो जब डांस हो तो डांस करो, शान्ति हो तो शान्त रहो। सब रूप बदलने की आदत चाहिए। कैसे होगा, नहीं, हमारे हाथ में है, हम अपनी बुद्धि को अपने हाथ में रखते हैं। जो हम चाहें वो कर सकते हैं। संगमयुग की विशेषता है अभी-अभी डांस, अभी-अभी योग, दोनों हमारे हाथ में हो। ऐसे नहीं कि डांस हो रहा है तो बस डांस के पीछे ही रहें, कन्ट्रोलिंग पॉवर हो। सबके हाथ में कन्ट्रोलिंग पॉवर है? हमारे में कन्ट्रोल होना चाहिए, जो चाहें वो रूप धारण कर सकें, ऐसी पॉवर है? देखो अपने में चेक करो। ऐसे नहीं, बैठे यहाँ हो लेकिन बुद्धि नाच रही हो, सेकण्ड में शान्ति, तो शान्ति वो भी सहज हो। संकल्प में भी नहीं सोचो, करने के टाइम करो, खूब करो लेकिन कन्ट्रोल तो कन्ट्रो, इसको कहा जाता है - योग की सिद्धि। सिद्धि स्वरूप हो ना! तो कन्ट्रोलिंग पॉवर ज़रूर होनी चाहिए। जहाँ बाबा ले जाए वहाँ जाओ, रास करो तो खूब करो। हम मालिक हैं ना, ये भी अभ्यास चाहिए, ऐसा नहीं कि ट्रैफिक कन्ट्रोल चल रहा हो और हमारी बुद्धि डांस में ही लगी रहे क्योंकि समय अनुसार ऐसी परिस्थितियाँ आनी हैं, जिसमें ये प्रैक्टिकल करना पड़ेगा, उस समय कहेंगे कि आदत नहीं है, ये नहीं होगा। मैं मालिक हूँ, जो पॉवर चाहिए मैं यूज़ कर सकती हूँ।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

ऐसा अभ्यास है कि फिर भी दिल हो रही है उठें! जब चाहें कर्मेन्द्रियाँ हमारे ऑर्डर में हों, लूज़ नहीं हों। मैं मालिक हूँ, हैं ऐसे! ऐसी कन्ट्रोलिंग पॉवर चाहिए। ऐसा समय आयेगा जब प्रैक्टिकल करना पड़ेगा तो अभ्यास कब करेंगे? अभ्यास तो अभी करना है ना। मैं मालिक हूँ, कर्मेन्द्रियों को जैसा ऑर्डर करूँ, वही हो। इशारा मिल रहा है अभी चुप हो जाओ और मैं बोलती रहूँ तो यह मैनर्स तो नहीं हुआ ना! तो समय अनुसार सेकण्ड में कन्ट्रोल चाहिए। मानो क्रोध आ रहा है, उस समय अगर कन्ट्रोल होगा तो झगड़ा नहीं होगा। जब कभी भी कोई परिस्थिति आये तो पास का सर्टीफिकेट मिलना चाहिए। तो जो भी करें दिल से करें, जब पढ़ाई का समय हो तो पढ़ाई पर अटेन्शन चाहिए। आदत डालो कुछ भी हो लेकिन मन पर कन्ट्रोल हो। आपकी टॉपिक्स में मन को कन्ट्रोल करने का टॉपिक भी है ना! तो वो प्रैक्टिकल होना चाहिए।

निराकारी स्थिति द्वारा सम्पन्न बनने की मेहनत करो

हम सभी के पुरूषार्थ का लक्ष्य है बाप समान बनना। अगर कल भी मेरा यह शरीर छूटे तो बाप समान विजयी बनकर छूटे। बाप समान बनना माना सिर्फ यह नहीं कि मैं पुरूषार्थी हूँ। अगर ऐसी स्थिति है तो बाबा-बाबा कहने के सच्चे अधिकारी नहीं है। तो हमें सूक्ष्म चेकिंग करनी है, निराकारी स्थिति बनाके व्यर्थ संकल्पों को भी खत्म करना है, तब कहा जाता है कि यह विजयी है। न व्यर्थ संकल्प हो, न व्यर्थ वाचा हो, न व्यर्थ समय जाये। रोज़ अपनी दिनचर्या में देखो कि आज सवेरे-सवेरे अमृतवेले ऐसी पॉवर भरी जो वह पॉवर हमारी सारा दिन हमें अनेक कार्य में मदद करे? इसलिए अमृतवेले योग में बैठ बाबा से रूहरिहान करनी है, प्रेरणा व शक्ति लेनी है। और फिर इस निराकारी स्थिति में रहने की दिन भर में बार-बार मेहनत करनी है। हर घण्टे सूक्ष्म अपना चार्ट देखना है।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

बाबा ने इतना सूक्ष्म में हम सबको सावधानी दी है जो कहाँ दृष्टि-वृत्ति भी अपवित्र नहीं हो। कोई भी शिकायत न आये। हर एक ब्राह्मण को इतनी सूक्ष्म से सूक्ष्म सावधानी रखनी चाहिए। लौकिक में तो चाहे दुनिया में क्या भी करें, कैसे भी चलें, कैसे भी रहें, कैसे भी घूमें, कैसे भी खायें, परन्तु हमारी मर्यादा में किसी को अंगुली टच करना भी नॉट एलाऊ है। बाकी तो क्या? हमारी मर्यादा में कोई भी एक-दो को विकर्म करने की मदद नहीं करे, परन्तु विकर्मों से बचाने में मदद करे इसलिए एक-एक ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी यह समझे, मेरी एक छोटी भूल हज़ारों को नोट हुई। जब कोई को कहो तेरी यह गलती है तो बुरा लगता है, परन्तु यह नहीं सोचते कि मैंने कितना बुरा किया जो मेरे को हज़ारों ने देखा या सुना। इसलिए खुद के ऊपर सवेरे से रात तक हर कर्म में सावधानी चाहिए।

अब हरेक अपनी ऐसी निराकारी स्थिति बनाओ जिस निराकारी स्थिति से हम सब फरिश्ता बनें या कर्मातीत बनें और हमारे कर्म अकर्म बनें। एक भी ऐसी गलती न हो जिस गलती का 100 गुणा दण्ड मिले क्योंकि ज्ञानी के ऊपर 100 गुणा दण्ड होता है, इसलिए सदा अपने को ऊंची ते ऊंची स्थिति पर देखो या अनुभव करो या मेहनत करो। जो करेगा वो रिटर्न में बाबा की दुआओं का पात्र बनेगा। तो हमारे ऊपर बहुत बड़ी जवाबदारी है - बाबा के लाखों बच्चों की। ऐसे नहीं कि सिर्फ 24 फैमिली है या सेन्टर है, नहीं। सब बाबा के लाखों बच्चे यहाँ से प्रेरणा लेकर जायें इसलिए स्वीट बाबा के स्वीट बच्चे अपनी स्वीट स्थिति बनाओ। वह स्वीट स्थिति है ही निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी अर्थात् फरिश्ता भव, कर्मातीत भव! अगर सब फरिश्ता हो जायें तो कितना अच्छा हो। तो इसके लिए इतना प्रिय बनो, इतना स्वीट बनो, इतना ही अपनी स्थिति सम्पन्न बनाओ। माया है - यह एक संकल्प में भी न आये, इतने विजयी बनो तब कहेंगे वाह बाबा वाह! वाह आपके बच्चे वाह! तो क्या सम्भव है? मायाजीत हो सकते हैं या नहीं! क्या कहेंगे? या कहेंगे कि दादी तो कहती हैं परन्तु बड़ा मुश्किल है, ऐसे तो नहीं हो सकता है! या अन्दर से एक दृढ़ संकल्प करेंगे कि हम बाबा को मायाजीत बन करके सैम्पल बनके दिखायेंगे! तो यह शिव जयन्ती हरेक सम्पन्न बनने की जयन्ती मनाओ। ऐसी सम्पन्न स्थिति बन सकती है? पुरूषार्थ करो, मेहनत करो। दिल में पक्का संकल्प लो। ऐसी रिज़ल्ट बाबा को मिले तो बाकी क्या चाहिए।

OM -20- 2018 DELHI_Page 1 and 2 12/28/2018 12:39 PM Page 3

हर सिचुएशन में स्टेबल होकर रेस्पॉन्ड करें

मुझे एक बहन मिली, उन्होंने कहा हम सोच रहे हैं कि हम महाराष्ट्र में एक डिपार्टमेंट ऑफ हैप्पीनेस क्रियेट करें। बहुत सुन्दर खुशखबरी सुनाई उस बहन ने, आप सब ब्लैसिंग देना उस बहन को, तब ये इम्पलीमेंट हो जायेगा। लेकिन डिपार्टमेंट मतलब क्या फिर? आप सोचो अगर आपने ये किया, फिर उसके बाद हरेक स्टेट कॉपी करेगा। और फिर इंडिया या फिर जो कंट्री होगी ना तो हेल्दीयेस्ट कंट्री तो अपने आप ही हो जायेगी ना। जो हैप्पी हैं वो हेल्दी तो हो ही जायेंगे। हमें सिर्फ कंट्री को हेल्दी और हैप्पी नहीं बनाना। हमें तो पूरी सृष्टि को हेल्दी और हैप्पी बनाना है। तो उसके लिए गुस्सा तो छोड़ना ही होगा। गुस्सा और हैप्पीनेस तो मैच ही नहीं करता। तो आज से एक चीज़ तो स्वाहा, कि दूर दूर से पूरी दुनिया से आपके शहर में जो भी आये, वो कहे कि ये ऐसा शहर है जहाँ कोई गुस्सा नहीं करता। वैसे भी इस शहर के लिए कहा जाता है कि यहाँ जो चीज़ करो तो वो पूरे देश में फैशन बन जाता है उसके बाद। बनता है ना फैशन? तो फिर पॉवर है ना आपके पास, आप एक न्यू लाइफ स्टाइल फैशन क्रियेट करें। बातें आयेंगी, सिचुएशन हमारे अनुसार नहीं होंगी। लेकिन हम पॉवरफुल, स्टेबल होकर उसको रेस्पॉन्ड करेंगे। ये हम फैशन नया क्रियेट कर रहे हैं। बस आप क्रियेट करो बाकि देश तो कॉपी कर लेगा उसको। लाइफ स्टाइल, मतलब हम क्या पहन रहे, क्या खा रहे, क्या पी रहे, ये नहीं, बल्कि लाइफ स्टाइल मतलब ये (आत्मा) जो लाइफ स्टाइल है ये लाइफ, आत्मा वो लाइफ है। उसके सोचने, बोलने और व्यवहार करने का स्टाइल कैसा है, वो है आपकी लाइफ। तो हमारा लाइफ स्टाइल पीसफुल और हैप्पीनेस है। तब तो हम हैप्पीनेस की डिपार्टमेंट क्रियेट करेंगे ना। बाकी गवर्नमेंट हमें हैप्पी नहीं क्रियेट कर सकती। कोई भी मनुष्य ये नहीं कर सकता। कौन करेगा वो हमारे लिए? हम। अब जब हमने कहा था कि मन की स्थिति, सिचुएशन पर डिपेंडेंट है। तब सिचुएशन सही नहीं थी तो हमने गुस्सा कर दिया। लेकिन अब जब दोनों का कोई कनेक्शन ही नहीं है तो फिर? तो फिर सिचुएशन आयेगी तो हम कैसे रेस्पॉन्ड करेंगे? आप सुबह सुबह कल निकले गाड़ी लेकर, किसी ने गलत साइड से ओवर टेक किया और थोड़ी सी टक्कर भी लग गई। कैसे रेस्पॉन्ड करेंगे? कैसे रेस्पॉन्ड करेंगे? हर सिचुएशन में चेक करना। गाड़ी को तो टक्कर डेंट ऑलरेडी पड़ चुका, बाकी खुशी में डेंट, हेल्थ में डेंट और वातावरण को दूषित करना आगे का प्रोसिज़र है। हमें लगता है कि वहाँ खड़े होकर गुस्सा करने से, एक भाई को मैंने कहा कि आप क्यों गुस्सा कर रहे हो। उन्होंने ऑलरेडी कर दिया। कहता है ताकि वो अपना गाड़ी चलाने का तरीका सुधार ले, उसके लिए मैं उसको डांट रहा हूँ अभी खड़े होकर। जो अपने ऊपर संयम नहीं रख पाये वो किसी और के ऊपर सयंम कैसे ला सकता है? ये कैसे संभव है? इसका ये मतलब नहीं कि लोग गलत करते जायें और हम उनको गलत करने दें। लेकिन एक चीज़ ऑलरेडी जब हो चुकी है, उसके ऊपर यहाँ डिस्टर्ब होना, फिर यहाँ रेडियेट करना और फिर उस परेशानी और गुस्से की स्थिति में ऑफिस पहुंचना।

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

वो वाला डेंट तो थोड़े से पैसों में ठीक हो जाता है लेकिन ये (आत्मा और दिल) वाला डेंट ठीक नहीं होता उसके बाद। तो एक नुकसान को एक ही नुकसान रखना चाहिए। एक नुकसान सिचुएशन है, बाकी नुकसान हम क्रियेट करते हैं।

स्वास्थ्य

कफ वाली व सूखी खाँसी के उपचार

खाँसी से हर पाँचवा व्यक्ति परेशान है चाहे इसका कारण ठंड हो, मौसम परिवर्तन हो, प्रदूषण हो या धुन्ध।

गन्ने की पत्तियों का रस निकालिये 6 चम्मच, लगभग 30 ग्राम पी लीजिए। हरा-हरा रस श्वास नली से फेफड़े तक का सारा कचरा साफ कर देगा। दिन में 2 बार लीजिए।

खाँसी और कफ से राहत दिलाए ये घरेलू कफ सीरप

दिनभर कफ के कारण खाँस-खाँसकर मानो जान ही चली जाती है। ऐसे में ज़रूरत होती है कि आप कुछ ऐसी चीज़ खाएं जो आपको तुरंत ही राहत दे। कफ दूर करने के लिए कफ सीरप वैसे तो बहुत होते हैं मगर इनके कुछ साइड इफेक्ट भी होते हैं जैसे चक्कर, नींद और आलस आना। सर्दी ज़ुकाम से राहत पाने के लिए पुराने ज़माने में लोग घरेलू उपचार का सहारा लेते थे।

अगर आप बाजारू कफ सीरप का सेवन नहीं करना चाहते हैं तो घर पर ही कफ सीरप तैयार कर सकते हैं। यह असरदार और कम लागत में बन जाती है। आइये जानते हैं कुछ असरदार घरेलू कफ सीरप बनाने की विधि।

शहद, नारियल तेल और नींबू

एक कटोरे में नारियल तेल गर्म करें, फिर उसमें शहद मिलाएं। इस मिश्रण को अपनी चाय में डालकर ऊपर से नींबू निचोड़े और पियें।

ब्राउन शुगर और गर्म पानी

एक कप पानी उबालिये, उसमें 2 छोटे चम्मच ब्राउन शुगर डालें। जब यह पीने लायक ठंडा हो जाये तब इसे मिक्स करके पिएं।

जैतून तेल, काली मिर्च और शहद

एक चम्मच जैतून तेल गर्म करें, उसमें काली मिर्च के दाने डालें। जब मिश्रण ठंडा हो जाए तब उसमें शहद का एक चम्मच डाल कर मिक्स करें और इसे खाएं।

शहद और हर्बल टी

दिन में दो बार हर्बल टी और उसमें शहद डाल कर पीने से गले को आराम मिलता है।

गर्म नींबू का जूस

अगर आपका गला दर्द हो रहा है तो नींबू गर्म पानी मिक्स करके पियें। आप इसमें चाहें तो थोड़ी शक्कर या नमक मिक्स कर सकते हैं।

ग्रीन टी और शहद

ग्रीन टी को शहद के साथ पीने से जल्दी लाभ मिलता है।

नमक पानी और नींबू का रस

नमक वाला पानी और उसमें नींबू का रस मिक्स करें। इसे पीने से आराम मिलेगा।

सूखी खाँसी

किसी भी कम्पनी की आयुर्वेदिक मरीच्यादि वटी 1-1 कर 5-6 दिन में चूसें और बीच-बीच में 1 टुकड़ा मुलेठी भी चूसते रहें। रात को सोते समय आधा चम्मच हल्दी और एक चम्मच देसी गाय का घी डालकर दूध भी पियें।

अनुभव

राजनीति के गलियारों से निकल, पकड़ ली अध्यात्म की पगडंडी...

राजनीति के गलियारों से निकलकर अध्यात्म की पगडंडी को पकड़ आज उस राह पर सम्पूर्ण रीति से चलने के लिए आतुर एक ऐसे महान व्यक्तित्व जिन्होंने प्रशासन से लेकर अनेकानेक पदों पर रहकर सबकी सेवा की। सेवा निवृत्ति के पश्चात् ये कुछ अलग करना चाहते थे। इसके लिए इन्होंने बहुत सारी संस्थाओं में जाकर के वहाँ की कार्यशैली को देखा, लेकिन जो उन्हें ब्रह्माकुमारीज़ में प्राप्त हुआ वो कहीं नहीं हो सका। पूर्व सांसद एवं सुप्रीम कोर्ट के लॉयर के रूप में भी आपने समाज के लिए बहुत से महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। आज आप परमात्मा के साथ का अपना अनुभव हम सबके साथ बांट रहे हैं...

मानसिक एकाग्रता हेतु अगर कहीं पर कुछ सीखने का है, तो वो ब्रह्माकुमारीज़ है। भक्ति लगभग मैंने चालीस वर्ष तक की, लेकिन प्राप्ति के नाम पर मुझे कुछ ज़्यादा अनुभव नहीं हुआ। इतनी भक्ति करने के पश्चात् भी मुझे परमात्मा का सत्य परिचय नहीं मिल सका। 2015 में जब मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा और इस ज्ञान को समझने का अवसर मिला, तो मैंने पाया कि इस ज्ञान ने मुझे इस संसार के साथ, मेरे खुद के बारे में और उस परम शक्ति का भी सत्य परिचय करा दिया। परमात्मा के साथ के अनुभव मेरे बहुत सारे हैं, लेकिन कुछ ऐसे अनुभव मैं आपके सामने रखना चाहूंगा जो हमारे और आपके जीवन के साथ दैनिक दिनचर्या में घटित होते हैं।

जब पहले मैं कोई काम करता और उसमें बीच बीच में किसी तरह की कोई उलझन आती, तो बी.पी. बढ़ जाता, टेंशन बढ़ जाती, लेकिन आज परमात्मा के साथ जुड़ने के बाद मैं बीच बीच में उससे कनेक्ट हो जाता हूँ और शक्ति को अर्जित करता हूँ, जिससे कार्यव्यवहार ठीक चलता है। मेरी कितनी सारी दवाइयां छूट गईं, नींद अच्छी हो गई। परमात्मा का यहां का सबसे अच्छा ज्ञान ड्रामा का है कि जो हो रहा सब अच्छा है। इससे मैं बहुत सकारात्मक सोच रखने लगा हूँ। इसका श्रेय मैं ब्रहमाकुमारीज़ के सदस्यों को देना चाहता हूँ जिन्होंने ज्ञान को तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और बड़ी विनम्रता से मुझे बताया। वैसे तो यहां सब परमात्मा के बच्चे हैं, निमित्त रूप से हैं, लेकिन कुछ आत्मायें विशेष रूप से सहयोगी हो जाती हैं, जिससे जीवन बदल जाता है।

आजकल मैं नित्यप्रति परमात्मा के महावाक्यों का, मुरली का श्रवण करता हूँ। उसका मनन चिंतन करके मुझे बहुत ऊर्जा महसूस होती है। आज इन तीन वर्षों में हुए इस अद्भुत परिवर्तन के लिए मैं बाबा को बहुत शुक्रिया अदा करता हूँ। अब मैं पूरी तरह से भगवान की सेवा अर्थ ही समर्पित भाव से रहना चाहता हूँ। बड़ी बड़ी बाधाओं को बड़ी ही सहजता से मैं पार कर पा रहा हूँ। कर्म का ज्ञान होने से अब मैं अपने कर्मों पर भी बहुत ध्यान देता हूँ, और वही कर्म करता हूँ जिसमें मेरे हित के साथ दूसरे का भी हित हो। जिससे मेरे हर कर्म से मैं भी खुश रहता हूँ और दूसरों को भी खुशियां बांटता हूँ। मेरे ज़रूर कुछ अच्छे कर्म रहे होंगे, जिसकी बदौलत मुझे परमात्मा को पहचानने और उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अब मुझे लगता है कि मैं और भी पहले इस ज्ञान को और संस्था को जान पाता और इसके सम्पर्क में आता तो मेरी ज़िन्दगी कुछ और ही होती! लेकिन ये भी कल्याणकारी है कि हर घटना कुछ नये अनुभव लेकर आई हैं। शिव बाबा का कितना मैं शुक्रिया अदा करूं! बहुत बहुत बहुत बहुत दिल से शुक्रिया बाबा... शुक्रिया।

- डॉ. बी.एल. शैलेष, पूर्व सांसद, अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट।

बालीगुडा-ओडिशा। 'ग्लोबल एनलाइटमेंट फॉर गोल्डन एज' विषयक कॉन्फ्रेन्स के दौरान मंचासीन हैं ब्र.कु. डॉ. सत्यानंद, ब्र.कु. निरूपमा, ममता बेहेरा, चेयरपर्सन, एन.ए.सी., बालीगुडा, ब्र.कु. प्रतिमा तथा अन्य।

घरौंडा-हरियाणा। नये भवन के शिलान्यास कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण के अवसर पर ईश्वरीय स्मृति में विधायक हरविन्दर कल्याण, नये अनाज मंडी के अध्यक्ष रामलाल गोयल, डॉ. मुकेश अग्रवाल, डॉ. एस.के. शर्मा, आर.एस. गांधी, क्राउन सिटी ओनर, ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. रेनू तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

OM -20- 2018 DELHI_Page 1 and 2 12/28/2018 12:39 PM Page 4

गुवाहाटी-असम। 'जीवन की पुन: इंजीनियरिंग' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन कार्यक्रम में त्रिपुरा के राज्यपाल महोदय प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. शीला। साथ हैं अनिल भुयान,पूर्व मुख्य अभियंता, ब्र.कु. भारत भूषण,राष्ट्रीय समन्वयक,वैज्ञानिक एवं इंजीनियरिंग प्रभाग तथा अन्य।

नेपाल-वोदेबरसाइन(राजविराज)। स्नेह मिलन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पूर्व कृषि एवं सहकारी मंत्री मृगेन्द्र कुमार सिंह यादव, समाजसेवी हरेकृष्ण सिंह, ब्र.कु. भगवती तथा ब्र.कु. पूनम।

साउथ अफ्रीका। 'द अफ्रीकन वुमेन इन डायलॉग' विषयक पाँच दिवसीय कॉन्फ्रेन्स के पश्चात् चित्र में फॉर्मर फर्स्ट लेडी ज़नेले,एम्बेकी फाउण्डेशन, ब्र.कु. वेदांती, ब्र.कु. अरुणा, ब्र.कु. प्रतिभा, ब्र.कु. दीप्ती तथा अन्य।

हाजीपुर-बिहार। सेवाकेन्द्र में नये हॉल के उद्घाटन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रुक्मणि,माउण्ट आबू, ब्र.कु. शीला, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजली तथा ब्र.कु. आरती।

राउरकेला-ओडिशा। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव पर आयोजित 'नि:शुल्क नेत्र एवं मधुमेह चिकित्सा शिविर' के दौरान पद्मिनी पानीग्रही को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें।

कर्म के साथ फल जुड़ा हुआ ही है

- गतांक से आगे...

भगवान अर्जुन से कहते हैं कि जो फल है वो परछाई की तरह हर कर्म के साथ जुड़ा हुआ ही है। फिर फल की कामना करना या उससे अधिक की कामना करने से, क्या वो प्राप्त हो जायेगा? कर्म हम थोड़ा करें और फल अधिक चाहें, तो क्या ये मिलेगा? अरे जो परछाई जैसी होगी उसी अनुसार वो प्राप्त होना है। उसकी इच्छा को लेकर के कर्म करना, ये तो यथार्थ नहीं है। इसमें हम अपने विचारों की शक्ति को यूं ही व्यर्थ गँवा रहे हैं। जिसने जितनी भावना से जैसा कर्म किया, उसका फल वैसे ही उसके साथ जुड़ जाता है। चाहे आप इच्छा करो या न करो। ये जुड़ा हुआ ही है। उससे अधिक इच्छा करने पर वो मिलने वाला नहीं है। इसलिए भगवान बार बार कहते हैं कि इसमें अपना समय, व्यर्थ क्यों गंवा रहे हो? आसक्ति और फल के त्याग को ही सात्विक त्याग माना गया है। मनुष्य कर्म कर भी रहा है लेकिन यह समझता है अरे, ये तो दु:ख भरा जीवन है। अर्थात् बार बार उस दु:ख के प्रति अफसोस करता रहता है या शारीरिक कष्ट के भय से इसका त्याग कर देता है। सोचता है ये कर्म मैं नहीं करूंगा, पता नहीं कहीं मुझे शारीरिक कष्ट न भोगना पड़े। अर्थात् नियत कर्म को दु:ख समझ करके करता है। ये समझकर उस कर्म का त्याग करते हैं तो ये राजसी त्याग हो गया जिसमें फल की प्राप्ति नहीं होती है। नियत कर्म का जो मोह वश त्याग करता है। जैसे आज एक माँ अपने बच्चे के मोह वश कुछ अलग त्याग भी करती है तो वह त्याग तामसिक त्याग हो गया। क्योंकि ये मोहग्रस्त त्याग है। सम्पूर्ण कर्म का त्याग संभव नहीं है। परंतु जो कर्म के फल के त्यागी हैं यही शुद्ध सन्यास है। यह सन्यास चरम उत्कृष्ट अवस्था है। भगवान ने स्पष्ट किया कि तीन प्रकार के त्याग कौन से हैं। उसमें सात्विक त्याग कैसे सहज हम अपने जीवन के अंदर ले आयें। राजसिक त्याग माना, जो कष्ट समझ करके उसको छोड़ देते हैं। इसमें त्याग नहीं हुआ। जहाँ मोह वश कुछ त्याग कर भी देते हैं तो ये तामसिक त्याग में आ जाता है। आगे भगवान ने कहा कि : हे भरत श्रेष्ठ, मन, वाणी, कर्म से कोई भी कर्म मनुष्य नीति सम्मत या नीति विरूद्ध करता है, उसके पाँच कारण हैं। अधिष्ठान, कर्ता, कारण, इच्छाएं व संस्कार। अधिष्ठान अर्थात् क्षेत्र, शरीर, स्थान (जहाँ हैं)। कर्ता कौन है? तो मन से प्रेरित होकर के आत्मा करती है। जो भिन्न भिन्न इंद्रियां हैं वो साधन बन जाती हैं, कारण के लिए। इच्छाएं : जो प्रकृति जन्य प्रवृत्तियां हैं : सतो, रजो, तमो : इनमें हम लिप्त होते हैं, इच्छा के वश। और अंत में है प्रालब्ध या हमारे संस्कार। ये पाँच चीज़ें हर कर्म के प्रति लगती हैं चाहे वो मन, वाणी या कर्म हो। कोई भी व्यक्ति नीति सम्मत करे या नीति विरूद्ध करे ये पाँच बातें इस विधि में आ जाती हैं।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

असंस्कारी बुद्धि वाला अपने को ही कर्ता समझता है। मैं के अभिमान में आ जाता है। वह दुर्गति को समझता नहीं। पर जो अहंकार भाव से ऊपर उठता है और जिसकी बुद्धि अलिप्त है, वो बंधनमुक्त हो जाता है। वह ईश्वरीय नियम में चलता हुआ ही कर्म करता है। इसमें भी तीन अवस्थाएं हैं। एक है देहभान, दूसरा है अभिमान और तीसरा है अहंकार। ये तीन स्टेजेज़ हैं। अहंकार सबसे बुरा है। क्योंकि वो अनेक आत्माओं को बहुत दु:ख पहुंचाने वाला है। अभिमान उससे थोड़ा कम है। अभिमान माना क्या? अभिमान दो शब्द से बना है। अभि-मान अर्थात् कोई भी इंसान जब भी छोटा मोटा कर्म करता है तो उसके मन के अंदर तुरंत ये भाव आ जाता है कि अभी अभी मुझे मान मिलना चाहिए। जहाँ ये मान प्राप्त करने की इच्छा आ गयी, ये है अभिमान। उसमें भले वो दूसरे को दु:ख न भी देता हो, लेकिन अपने अभिमान की पुष्टि ज़रूर करता है। जहाँ उसको मान मिल जाता है वहाँ वो खुश हो जाता है। आत्म तृप्ति का अनुभव करता है। उस भान में आकर वो कोई भी कार्य करने के लिए तैयार हो जाता है। - क्रमशः

तुम जियो हज़ारों साल, साल के दिन हों पचास हज़ार....

2 जनवरी 2019, आपके 80वें जन्म दिन की आपको ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ। आप यूं ही परमात्मा का संदेश सारे विश्व में पहुंचाकर सबको खुशियां बांटते रहें।

ब्रह्माकुमार करुणा भाई जी,
मल्टीमीडिया चीफ,ब्रह्माकुमारीज़,
माउण्ट आबू

यह जीवन है...

आज सब सुविधाओं के बावजूद आप दु:खी हैं क्यों? जैसे किसी वृक्ष का सम्बंध अगर उसकी जड़ों से टूट जाये तो वृक्ष जीवित नहीं रह सकता। आपके जीवन की जड़ें आपके भीतर हैं लेकिन आप उनसे टूटे हुए हैं। जिसकी वजह से जहाँ शान्ति और आनन्द होना चाहिए, वहाँ आप नर्क भोग रहे हैं। बाहर धन कमाइए परंतु भीतर के द्वारा अपनी जड़ रूपी आत्मा को भी सींचिये, फिर देखिये जीवन में आनन्द ही आनन्द है या नहीं।

ख्यालों के आईने में...

जो ज्ञानी होता है उसे समझाया जा सकता है, जो अज्ञानी होता है उसे भी समझाया जा सकता है। परन्तु जो अभिमानी होता है उसे कोई नहीं समझा सकता, उसे केवल वक्त ही समझा सकता है।

खुशखबरी!! नये वर्ष की अनुपम सौगात 'अवेकनिंग'

सर्व ब्राह्मण कुलभूषण निमित्त भाइयों और बहनों, ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा वर्ष 2019 की अनुपम सौगात एक नवीन आध्यात्मिक चैनल '**अवेकनिंग**' का शुभारंभ किया गया है। यह चैनल 24 घंटे प्रसारित होता है, और नित नये रचनात्मक कार्यक्रमों से भरपूर है। आप सभी इस चैनल को देखने के लिए नीचे दी गई तकनीकी जानकारी अपने केबल ऑपरेटर से साझा कर उनसे इस चैनल को चालू करने का अनुरोध कर सकते हैं। इसके साथ ही इस चैनल को इसकी वेबसाइट, फेसबुक और यू-ट्यूब में भी लाइव देखा जा सकता है।

साथ साथ यह चैनल जिओ टी.वी. एप्प पर भी उपलब्ध है। आप इसे अन्य सभी से शेयर करना ना भूलें।

Satellite-GSAT-17-93.5
D/L Frequency-4085 MHz
Symbol Rate-30.0 MSPS
FEC-5/6
Roll of 20%
D/L Polorization-Vertical

site: http://awakeningtv.in
http://youtube.com/awakeningtv
http://facebook.com/awakeningtv

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

शिव अवतरण

ओमशान्ति मीडिया

महाशिवरात्रि विशेषांक

शिवरात्रि पर परमात्मा का आगमन धरा पर

भासना, आहट, सुगबुगाहट उस चिरातीत की, जो चिरकाल से इस लोक को सम्भाले हुए हैं, जिनसे त्रिलोक दैदीप्यमान होता है। जिनका ना होना या होना किसी को एहसास में भी ना हो। हर कोई कहता कि हाँ, हैं वो, शायद यहीं कहीं हैं, मेरे आस पास हैं। संसार जिनकी गाथा गाते नहीं थकता, अप्रत्यक्ष रूप से जिन्होंने हर पल, हर क्षण, हर घड़ी सभी को सुरक्षित किया, अनजाने ही सही, लेकिन आरतियों से हमने उन्हें थोड़ा बहुत सराहा, लेकिन जाना नहीं कि ये वही हैं जिन्हें सुर, नर, मुनि ने भी पाने के लिए अपना पूरा जीवन दांव पर लगा दिया। एहसास की ये निर्मल गाथा हम चाहे गायें ना गायें, लेकिन उस त्रिलोकीनाथ को हम ढूंढ़ तो रहे ही हैं। हम चाहें ना चाहें, लेकिन हमारी प्यास अभी भी बुझी हुई नहीं है। इस अबुझ पहेली को अब बूझने का समय आ चुका है। वो आ चुके हैं हमारे द्वार, जिनको आपने तरह तरह के शारीरिक कष्ट उठाकर याद किया और उन्हें पूजने के लिए ऊँचे ऊँचे पहाड़ों के चक्कर लगाये। अब वो हमें पुकार रहे हैं कि आओ मेरे प्यारों, तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न होकर मैं तुम्हारे पास आ चुका हूँ...

आप चाहते हैं कि हम बदलें, या आप ये चाहते हैं कि वो आकर हमको बदलें, या अदला-बदली दोनों तरफ से हो, क्या अच्छा है? हम तो सोचते हैं कि दोनों अच्छा है। लेकिन अगर अदला-बदली हो, तो शायद सौदा अच्छा होगा। तो सौदागरों का सौदागर हमसे कुछ बदलना तो चाहता है, लेकिन बदले में वो हमसे वो चाहता है जो हम छोड़ना नहीं चाहते। और शर्त ये है कि बिना छोड़े वो सौदा नहीं करना चाहता। संसार निरंतर भाग रहा है। व्यक्ति की इन्द्रियां साथ छोड़ रही हैं, तो भी अगर आप उससे कह दो कि अब बहुत हो गया, आप जाइये, तो भी उसे बुरा लगता है। इसका मतलब व्यक्ति का स्वयं से प्रेम बहुत है, तभी तो वो नहीं जाना चाहता, वो जीना चाहता। लेकिन इसे जीना नहीं कहते, झेलना कहते हैं और झेलाना कहते हैं। हर कोई किसी की सेवा क्यों करे, अरे! जीवन तो वो है, जिसमें स्वास्थ्य अर्थात् तन, मन, जन और धन चारो का सुख हो। लेकिन आज इन चारो में से कोई न कोई कम या ज़्यादा हमारे पास है। इन्हीं चारो को पुनः हमको अच्छी तरह से प्रदान करने के लिए वो सौदागर, जिनको हम प्यार से परमात्मा कहते या त्रिलोकीनाथ कहते या शिव निराकर कहते, वही हैं जो हमसे सौदा करने के लिए प्रस्ताव रख रहे हैं। और वे कहते हैं कि जो तुम्हारा पुराना सबकुछ है ना, इसे मुझे दे दो। इसी पुराने तन, मन, धन से तुमने मुझे तरह तरह से पुकारा है, मंदिरों में चढ़ावा चढ़ाया है, फूल मालायें अर्पित की हैं। तो उन सबका एवजा देने के लिए तुमने मुझे बंधायमान कर दिया। विनिमय की यह प्रक्रिया है, सोच लो, एक तरफ तुम्हारा पुराना सबकुछ और एक तरफ तुमको सबकुछ नया मिलने वाला है। बुद्धि को थोड़ी देर के लिए खुला छोड़ के देखो कि अगर तुमको साइकिल के बदले बहुत बड़ी कार मिल जाये, उसी प्रकार सड़े तन, व्यथित मन या दुःखी होकर या करके कमाये हुए धन के बदले अगर स्वयं भगवान तुमको मिल जाये, तो कितना सस्ता सौदा है! तो क्या आप सौदा नहीं करना चाहते! परमात्मा स्वयं आह्वान कर रहा है हमारा, कि मनुष्यों, इस लीप युग के अंतिम समय में अंतिम आह्वान हमारा कि अब तो जाग जाओ, कि कहीं सुख नहीं है मेरे अलावा। मैं ही सुख का सागर हूँ, शांति का सागर हूँ, मैं ही महाकाल हूँ, मैं ही निराकार शिव हूँ, मैं तुम्हारा पिता, मैं तुम्हारी माता। क्यों नहीं जागते हो? अब मैं तुम्हारे द्वार खड़ा होकर तुम्हारा आह्वान कर रहा हूँ, आओ... मुझसे मिलन मनाओ...।

वर्तमान समय हम युग परिवर्तन काल से गुज़र रहे हैं, जब कलियुग की समाप्ति और सतयुग का आरम्भ होता है। इस संगम पर परमात्मा अवतरित होते हैं और इसी स्वर्णिम वेला में परमात्मा शिव और आत्माओं का मिलन होता है।

शुभकामना संदेश

विश्व में सभी को जिस सुख, शांति, आनंद की तलाश है, उसका आधार ज्ञान है, और ज्ञान देने वाले ज्ञान दाता परमपिता परमात्मा निराकार शिव हैं। इस ज्ञान के आधार से हम हर समय अपने आप को खुश व शांत रख सकते हैं। हमारे दिल को चैन व आराम देने के लिए दिलाराम परमात्मा शिव अब इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। हम उनसे असीम सुख ले रहे हैं। मैं चाहती हूँ कि सभी उस दिलाराम परमात्मा का सुख लें। अब वो सुनहरी घड़ियाँ हम सबकी नज़रों के सामने आने ही वाली हैं, क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है। उस परमात्मा शिव के अवतरण का यह संदेश जन जन तक पहुंच जाये और हर आत्मा सुख, शांति, पवित्रता का वर्सा ले ले, यही महा शिवजयंती के अवसर पर हमारी शुभ भावना है। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ शिवजयंती पर्व की कोटी कोटी व हार्दिक शुभकामनाएँ।

राजयोग से ही होगा सम्पूर्ण परिवर्तन

बढ़ता तनाव, उससे होने वाले प्रभाव को कोई भी अनदेखा नहीं कर सकता। हमारा शरीर सम्पूर्ण प्रकृति को दर्शाता है। जब हमारी प्रकृति ही बदल जायेगी तो उससे हम कितने दिन तक चल पायेंगे! आज हमारा इंद्रियों पर संयम नहीं है। सम्पूर्ण प्रकृति का नियंत्रण हम कर सकते हैं, किंतु इसके लिए स्वयं को समझना होगा। समझने के लिए अपने को समर्पित करना होगा, उस आस्था में, विश्वास में जो ईश्वर के साथ ही हो सकता है। अरे! शरीर तो एक साधन है परमशक्ति को अनुभव करने का, उसी को आप असंयमित होकर नष्ट कर रहे हैं। परमात्मा से योग हमारी शारीरिक, मानसिक क्षमता को बढ़ाता है, हमारी विशेषताओं को विकसित करता है। बस इसके लिए सत्य ज्ञान की आवश्यकता है। अब हमारे पास ना ही ज्ञान है, ना अनुभव, इसलिए कठिन लगता है। अरे! यह बहुत ही सरल है, जैसे बीज में वटवृक्ष है, वैसे ही हमारे अंदर नर से नारायण बनने की असीम क्षमता है। परमात्मा से योग ही हमें नर से नारायण बना देगा, और वह संभव होगा राजयोग से।

सत्यम् शिवम् सुंदरम् की गुनगुनाहट छाई और खुशियों की बहार लाई

वैसे तो नये साल में बहुत कुछ आपके पास करने का होगा, और आप कुछ बदलना भी चाहते होंगे, लेकिन इस बदलते हुए समय में अगर कोई ऐसा हमको मिल जाये जो हमें शक्ति प्रदान करे, हमेशा हमारा साथ निभाये और आगे की दिशा भी दिखाये तो कितना अच्छा हो! परमात्मा हमारा पहले भी साथी था, लेकिन उस साथी का हमें पता नहीं था। वो इस समय इस धरा पर है और हमारा साथ निभा रहा है, हमको हर वक्त पालना दे रहा है। इसका अब आपको सत्य अनुभव होगा ही। इस कल्प में पिछले आठ दशकों से परमात्मा माउण्ट आबू में हम सभी को बेहद की पालना दे रहे हैं। हम चाहते हैं कि ये पालना आपको भी मिले, जिससे हम एक नये युग में जाने की तैयारी कर सकें जहाँ पर तन, मन, धन, जन का सुख होगा। सभी पवित्र होंगे और एक मनोरम दुनिया होगी। आप भी तो ऐसी दुनिया चाहते हैं ना, जहां सबकुछ मन इच्छित हो, और परमात्मा भी यही चाहते हैं कि आपको सबकुछ मन इच्छित मिले। तो इस स्वप्न को साकार करने में आप भी सहयोग देंगे ना! तो देर किस बात की, जब बनाने वाला ही हमें ले जाने को तैयार है तो हम भी जल्दी तैयार हो जायें। जिसे हम सत्यम् शिवम् सुंदरम्... कहकर गुनगुनाते रहे, वही हमसे ये बात कह रहे हैं और सत्य की नींव पर नई दुनिया खड़ी कर रहे हैं। उसमें हम ही तो होंगे ना, क्योंकि हम ही उनके बच्चे हैं और वो हमारा पिता।

OM -20- 2018 DELHI_Page 1 and 2 12/28/2018 12:39 PM Page 6

ऐसे होते हैं निराकार 'शिव' प्रकट

शिव पुराण में भी लिखा है कि भगवान शिव ने कहा - 'मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा।' आगे लिखा है कि - 'इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम 'रूद्र' हुआ।'

शिव पुराण में यह भी लिखा है कि 'जब ब्रह्मा जी द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ और इस कारण वह निरुत्साहित थे, **तब शिव ने ब्रह्मा जी की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा जी को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा सृष्टि रची।**' शिव पुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उन द्वारा सतयुगी सृष्टि को रचा। **इस पौराणिक उल्लेख का भी यह भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मस्तिष्क 'ललाट' में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्होंने संसार का कल्याण किया।** महाभारत में लिखा है कि भगवान ने ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया और

हाँ, मैं हुआ ब्रह्मा के ललाट से प्रकट

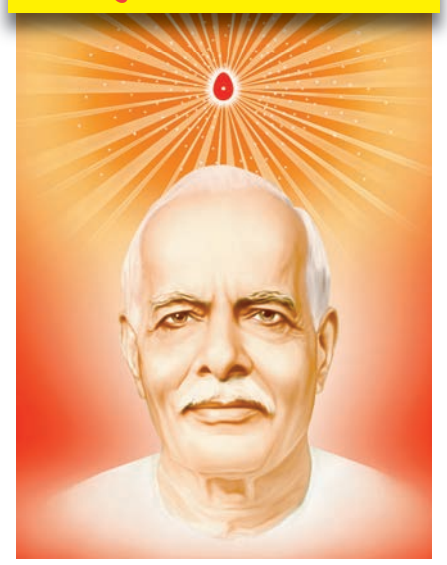

सतयुग की पुनः स्थापना की।

स्वयं गीता में भी लिखा है कि मैंने पहले यह ज्ञान विवस्वान को दिया था। सोचने की बात है कि सृष्टि के आदि में वह आदिम वक्ता कौन था? ब्रह्मा ही को तो 'आदि देव' और शिव ही को 'स्वयंभू अथवा आदि नाथ' कहा गया है। ध्यान देने की बात है कि आद्य शंकराचार्य ने भी अपने भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए कहा है कि भगवान ने नई सृष्टि रचने के समय 'सर्ग' ही यह ज्ञान दिया था तथा योग सिखाया था। स्पष्ट है कि तब ज्योतिस्वरूप परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही यह ज्ञान दिया होगा। इसलिये ही भारत के प्रायः सभी प्राचीन धर्म-ग्रन्थों में ज्ञान के उद्गम के साथ ब्रह्मा और शिव ही का नाम जुड़ा हुआ है। स्वयं महाभारत में भी लिखा है कि भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया। **परंतु चूंकि बाद में वैष्णवों ने महाभारत को वैष्णव ग्रन्थ बनाने के यत्न किये, इसलिए उन्होंने लिख दिया कि नारायण ने ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया।** परंतु इस श्लोक में जो 'प्रभुख्यतः' शब्द हैं, वे ही इस बात को सिद्ध करते हैं कि ज्योतिस्वरूप, अविनाशी परमात्मा ही के प्रवेश होने के बारे में कहा गया है। नारायण तो स्वयं ही विवस्वान थे, अर्थात् सूर्यवंशी थे। गीता ज्ञान जानने वालों में ब्रह्मा ही को भागवत् आदि ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। तब अवश्य ही ब्रह्मा को परमात्मा ही ने यह ज्ञान दिया होगा और उन्हें माध्यम बनाकर अन्य आत्माओं को भी गीता ज्ञान सुनाया होगा।

गीता में है सही कर्म करने की कहानी

श्रीमद्भगवद् गीता को लेकर आज भी बहस जारी है कि इसके असली जन्मदाता कौन हैं? यह भगवानुवाच है या श्रीकृष्णवाच। तर्क यह कहता है कि पूरे विश्व में लोग गीता को सम्मान देते हैं। और-और धर्म ग्रन्थों के लिए कहते भी हैं कि ये मुस्लिम धर्म का है, ये सिक्ख धर्म का है, ये ईसाई धर्म का है। **लेकिन श्रीमद्भगवद् गीता को सबसे ज़्यादा पढ़ा जाता है। उसका रूपांतरण अन्य भाषा में सबसे ज़्यादा है, इसका कुछ तो कारण होगा। क्योंकि और धर्म पुस्तकों में उस धर्म की ही चर्चा है। लेकिन श्रीमद्भगवद् गीता में मनुष्य के कर्म की कहानी है।** उसमें निष्पक्ष 'न्यूट्रल' भाव है। क्योंकि कर्म सभी को करना है। इसलिए उस कर्म की सही व्याख्या इस महान पुस्तक में है। और न्यूट्रल कर्म सिर्फ परमात्मा ही सिखा सकता है, जो निष्काम है, जिसको फल की इच्छा नहीं है। जबकि किसी भी देहधारी मनुष्य रूपी देवता को लोग एक धर्म से जोड़कर देखेंगे ही, क्योंकि वह सीमित है। वैसे भी आज सभी अधर्म में धर्म की बात कर रहे हैं। जहाँ सभी की बुद्धि मलिन है, संकीर्ण है, वहाँ उस निराकार परमात्मा को समझना मुश्किल है, उसे समझने

के लिए दिव्य बुद्धि चाहिए। यहां हम आपको स्पष्ट करना चाहेंगे कि **गीता के तीसरे अध्याय में भगवान और अर्जुन के संवाद में भगवान कहते है – 'हे अर्जुन! तुम मुझे नहीं देख सकते, न ही जान सकते। मुझे इन चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता, ना ही पहचाना जा सकता है। मुझे तो दिव्य चक्षुओं से ही देखा जा सकता है।'** श्रीकृष्ण तो सामने ही थे, फिर अर्जुन कृष्ण को कैसे नहीं देख सकता था! इससे स्पष्ट होता है कि ये साकार की बात नहीं, निराकार ज्योति स्वरूप परमात्मा की बात है, जो अजन्मा हैं, मनुष्य की तरह जन्म नहीं लेते, बल्कि परकाया प्रवेश कर गीता ज्ञान देते हैं। और श्रीमद्भगवद् गीता में ही भगवानुवाच कहा गया है, बाकी कोई शास्त्र में नहीं, इसका अर्थ कि निराकार परमात्मा शिव ने ही गीता ज्ञान दिया।

गीता, जो कि परमात्मा द्वारा सुनाए गए महावाक्यों का संकलन ही है, वही हमें गृहस्थ जीवन जीने में मदद कर सकती है। उसी को सभी ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से माना है। आपसे हमारा नम्र निवेदन है कि उसे उसी रूप से जानने के लिए आप बस तीन महीने का एक संकल्प लें और इसी के बारे में विचार करें, तो आप इस निष्कर्ष बिन्दु पर पहुंचेंगे कि परमात्मा तो केवल निराकार शिव ही हैं और वही हैं जो हमें दिव्य नेत्र प्रदान कर अपने और इस सृष्टि चक्र के बारे में बताते हैं।

परमात्मा आकर क्या करते जो मनुष्य नहीं कर सकता

आज के परिदृश्य में अधिकतर मनुष्य नकारात्मक विचारों का टोकरा सिर पर लेकर ही ज़िन्दगी को ढ़ोता हुआ चल रहा है। आप ही बताइये कि आप बीस किलो का वज़न सिर पर लिये हुए चलोगे तो थकोगे नहीं! और जब थकते हो, तो चिल्लाते भी हो। फिर पुकारते भी हो और इससे छूटने के लिए कई हथकंडे भी अपनाते हो। क्योंकि इस बोझिल भरी ज़िन्दगी से आहत हैं।

हमने सबकुछ तो हासिल किया, किन्तु इस बोझ से छूटने का न तो ज्ञान है और न तौर-तरीका। मनुष्य बोझ के साथ जुड़ा इसलिए था या शादी इसलिए की, कि हम खुशी के साथ पारिवारिक जीवन का निर्वाह करेंगे। लेकिन जीवन में इन सम्बंधों के आने के बाद हम बोझिल इसलिए हो गए, क्योंकि हम सबको बोझ समझने लगे, जबकि ये हमें पता होना चाहिए कि सबका अपना-अपना भाग्य और कर्म है। हम रहें ना रहें, कार्य चला है और चलता रहेगा। ये ज्ञान

हमको परमात्मा आकर देते हैं। अब इस दुःख के चक्रव्यूह से छूटने के लिए परमात्मा आपको सही मार्ग और सही ज्ञान देते हैं और कैसे बोझिल जीवन को आसान बनाकर सुकून भरा जीवन जिया जाये, उसका तरीका भी बताते हैं। जो मनुष्य खुद उलझा हुआ हो, वो सबको उलझा देगा, लेकिन परमात्मा सुलझा हुआ है, इसलिए वो सब सुलझा देंगे। आप किसी संत के पास जाओ, महात्माओं के भाषण सुनो, इसमें कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन वहां आपको मूल्य आधारित शिक्षा मिलती है, मुक्ति का मार्ग नहीं मिलता। चाहो तो कर के देख लो। आप जाते ही थोड़े देर के लिए, और फिर घर आते ही वही सारी उलझन, वही चिंता और वही सोच। तो फायदा क्या हुआ सत्संग सुनने का जब मैं उलझन से निजात न पा पाऊँ !

तो हम आपको यही कहना चाहेंगे कि उस महाज्योति, उस नूर को पहचानो जो हमारे अंतरतम के प्रकाश को बढ़ा देगा, हमें जागृति दिलायेगा। इसमें दो स्थितियां बनेंगी, एक तो आप अपने लिये बोझ को समझदारी से छोड़ दो या फिर समय आपको ज़बरदस्ती इसे छोड़ने पर मजबूर कर देगा। और मजबूरी में छोड़ेंगे तो दुःख ही मिलेगा और समझदारी से छोड़ेंगे तो आप सुख पायेंगे। ये है परमात्मा की दी हुई सीख। ये कार्य सिर्फ परमात्मा कर सकते हैं, कोई मनुष्य नहीं कर सकता।

परमात्मा द्वारा परिवर्तन के प्रभाव का प्रमाण यहाँ पर ही...

हमारी शुभभावना, जन-जन तक पहुँचे शिव संदेश

हम पिछले आठ दशकों से निराकार की पालना में साकार माध्यम से पल रहे हैं। अभी तक हमने जो सुख शांति का अनुभव किया, बड़ी-बड़ी परिस्थितियों के बीच में रहते हुए संतुष्टता को शिरोधार्य किया, ये सब उस परमात्मा के द्वारा ही संभव हुआ। हम चाहेंगे कि आप सभी परमात्मा से महाशिवरात्रि के पर्व पर वो ही सब प्राप्त करें। जन-जन तक परमात्म अवतरण का संदेश पहुंचे और आप सभी का जीवन परमात्मा से जुड़कर सत्यम् शिवम् सुंदरम बन जाये, यही हमारी शुभकामना है।

- राजयोगी ब्रह्माकुमार निर्वैर,महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़।

परमात्म कार्य का प्रत्यक्ष प्रमाण इस संस्थान में

यहाँ आते ही मेरा अनुभव ये रहा कि मुझे एक सशक्त आध्यात्मिक फीलिंग हुई। यहां का प्रकम्पन मुझे शांति प्रदान कर रहा था। जीवन में बड़ा काम करने के लिए बड़ा दिल होना ज़रूरी है। छोटे दिल का व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता। और जिसका दिल जितना बड़ा होगा, वह उतना ही आध्यात्मिक होगा। ब्रह्माकुमारी संस्थान में दिल व मन को बड़ा करने की शिक्षा दी जाती है। संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी का कितना बड़ा दिल होगा जो इतने बड़े परिवार को सम्भाल कर रखा है। जो इतने बड़े परिवार को बनाकर विश्व के 146 देशों में भारत की आध्यात्मिकता को पहुंचाया है। मैं ये मानता हूँ कि जो काम सरकार नहीं कर सकती, वो ब्रह्माकुमारी संस्थान बखूबी कर रहा है। **- माननीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह,भारत सरकार।**

परमात्म शक्ति से होती स्व की चार्जिंग यहाँ

विश्वव्यापी संगठन ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही सेवाएं मानव को सही दिशा में ले जा रही हैं। संसार को जिस शांति की ज़रूरत है, उस वातावरण का निर्माण यहां से हो रहा है। कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो, ये शब्द यहां मंत्र की तरह कार्य करते हैं। पवित्रता आत्मा की मूल संपदा है। यहां से मन, बुद्धि और कर्मों को शांति के पथ पर ले जाने के लिए आध्यात्मिकता की शिक्षा दी जा रही है। संस्था की पवित्रता हर मानव को अध्यात्म से परिपूर्ण करने में मदद करती है। इस संस्था की हर गतिविधियां काबिले तारीफ हैं। हमें अर्जुन और श्रीकृष्ण के वास्तविक संवाद को समझने की ज़रूरत है, जिसका यहां पर स्पष्टीकरण हो रहा है। यहां पर परमात्म शक्ति से स्वयं को चार्ज करने के लिए स्व के अंदर आत्म शक्ति को जागृत करते हैं। **- सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा।**

रूहानी इल्म द्वारा बनाया जाता यहां जन्नती इंसान

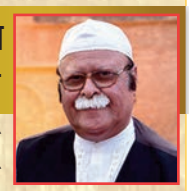

हम लोग जन्नत, हेवन के बारे में कल्पना करते हैं, लेकिन मैंने यहां ब्रह्माकुमारी संस्थान के माउण्ट आबू में जन्नत को देखा, जो राजयोग की उपज है। यहां प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर शांति, प्रेम, सहयोग की भावना और रौनक देखने को मिली। यहां से दुनिया में इंसानियत का पैगाम दिया जा रहा है। राजयोग के रूहानी इल्म के द्वारा ही जन्नती इंसानी खूबियों को निखारा जा सकता है। **- इमामिया एजुकेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष नवाब ज़फर मीर अब्दुल्लाह।**

OM -20- 2018 DELHI_Page 1 and 2 12/28/2018 12:40 PM Page 7

सर्वोच्च गुरू शिखर पर सतगुरू परमात्मा शिव का महापरिवर्तन कार्य

किसी भी कार्य का प्रमाण सभी चाहते हैं, होना भी यही चाहिए। लेकिन सत्य को जानना कि यही सत्य है, उसके लिए उतनी शक्तिशाली बुद्धि की परख शक्ति भी चाहिए। भगवान है, सत्य है और वो माउण्ट आबू में ही आते हैं, इसका प्रमाण है। दुनिया भर में लाखों संस्थाएं हैं, लेकिन संस्थाओं का कार्यभार सम्भालने वालों के मन में कुछ दिनों के बाद विकृत भाव उत्पन्न हो ही जाते हैं। क्योंकि शांति कुछ दिनों में लोगों की क्षीण होने लग जाती है। लोगों के अन्दर नाम, मान, शान का भाव आ ही जाता है। इसीलिए शायद परमात्मा द्वारा संचालित एक मात्र संस्था जहाँ पर विकृति आ ही नहीं सकती है।

करावनहार परमात्मा हम केवल निमित्त

हाँ सभी की भावना परमात्मा के साथ हो जाए, कार्य करते हुए सभी मन से एक ही बात कहते हैं, सबकुछ बाबा (परमात्मा) करा रहे हैं। यहां किसी से भी पूछ लो, वो ये ही कहते हैं कि हम निमित्त हैं, करावनहार करा रहा है। शायद इसीलिए कार्य अच्छी तरह से होते हैं। यदि कोई व्यक्ति इसे करवाता, तो करने वाला कुछ ना कुछ तो बोल ही देता कि मैं ही क्यों करूँ! लेकिन यहाँ हर एक ब्रह्मा वत्स यही सोचकर कार्य करते कि ये परमात्मा का कार्य है।

यहाँ स्वतंत्रता के साथ सभ्यता भी

आप देखिये, जहाँ स्वतंत्रता होती है वहाँ पर कार्य सही होते हैं। यहाँ स्वतंत्रता के साथ मर्यादा, सभ्यता व धारणा भी भगवान सिखाते हैं। संस्कारों को भगवान जैसा बनाने के लिए सभी यहाँ तत्पर हैं, उसका कारण मात्र एक है कि परमात्मा की शिक्षा सभी के लिए एक जैसी है, सभी को एक पुरूषार्थ सिखाया जाता है। प्रमाण यही तो माना जाता है कि भगवान ने अपने जैसा इंसान बनाया। सच में वहाँ ऐसे प्रभाव हैं कि आसुरी संस्कारों वाले कुछ मनुष्यों ने अपने सारे संस्कार बदल दिये और बिल्कुल देवता की चलन से चलने लगे हैं। ये सिर्फ परमात्मा का जादुई प्रकाश ही कर सकता है।

वो नूर, बना रहा कोहिनूर

लाखों लोग, परमात्मा के बच्चे, इस कार्य में संलग्न हैं कि हम परमात्मा के जैसा ही कोहिनूर बनेंगे, अमूल्य बनेंगे और बन रहे हैं। कार्य सुचारू रूप से चलना प्रमाण है कि परमात्मा है और वो यहीं है। स्व-परिवर्तन की लहर सबके अन्दर परमात्मा ने ही डाली है। वो शिवबाबा आज भी ज्ञान से, समझ से हमको अमूल्य पालना देकर अच्छे से अच्छा बना रहे हैं।

परमात्मा का कार्य अनवरत, प्रमाण भी

यहाँ हर रोज़ कर्म की गुह्य गति का ज्ञान देते हैं। बार बार अलर्ट करते, उन्हें सुरक्षित करते। और कौन करेगा ऐसा! सब कुछ दिन में अधैर्य हो जाते, सोचते कि ये कार्य अब हमसे नहीं होगा। हमारा धीरज खत्म हो रहा है, लोग बदल नहीं रहे, परिवर्तन नहीं हो रहा है। तो उस कार्य को छोड़ देते हैं। लेकिन एक परमात्मा ऐसा है जो ये कार्य अनवरत कर रहा है। ये है उस नूर का प्रभाव। आप उस नूर के प्रभाव को, उन कोहिनूरों में अगर देखना चाहते हैं तो एक बार यहाँ अवश्य आयें। उस पालना का साकार प्रमाण देखिये। शायद फिर कहेंगे कि ये तो सिर्फ परमात्मा ही कर सकते हैं। ये उन्हीं का कार्य है।

कैसे पहचानें... वो ही है परमात्मा...!!!

आज एक तरफ तो हम कहते हैं कि गॉड इज़ वन, सबका मालिक एक। वहीं दूसरी ओर हम कह देते कि मुझमें भी भगवान, तुम में भी भगवान। फिर और कई तो प्रकृति को भी भगवान मानते हैं। सृष्टि में इन विभिन्न तरह के भाव लिए वर्ग हैं। सिर्फ हमने जैसे उसको जाना, समझा, उसी से भावनायें बनाईं। पर देखा जाये तो इनमें से ज़्यादातर लोग यही मानते कि परमात्मा एक ही है। अगर हम इसे ही लें, तो फिर परमात्मा को कौन सी ऐसी कसौटी पर कसें कि उसे यथार्थ रूप से पहचाना जा सके? ताकि अगर कल ही भगवान मेरे सामने आ जाये तो हम उसे पहचान सकें। तो इसके लिए हैं ये मुख्य पाँच कसौटियाँ...

1. भगवान वो हो सकता जो सर्वमान्य हो

(ग्लोबली एक्सेप्टेड) हो। जिसको सभी धर्म वाले परमात्मा स्वीकार करें, जैसे हम कहते हैं कि राम भगवान है, लेकिन अन्य धर्म वाले तो कहते हैं कि ये आपके भगवान हैं। उसी श्रृंखला में यदि हमें ईशा मसीह कहें, तो हम कहेंगे कि ये तो क्रिश्चन धर्म के हैं। इसी तरह सभी ने अपने अपने भगवान बना रखे हैं, तो ये तो सर्वमान्य नहीं हुआ ना। भगवान तो वो है ना जिसे सभी मानें। कोई भी स्पष्ट नहीं है, तो उसे भगवान कैसे मानें!

2. परमात्मा वो है, जो सर्वोच्च हो

जिसके ऊपर कोई ना हो। उसका न कोई माता पिता हो, न बंधू-सखा, न शिक्षक, उसे कहेंगे परमात्मा। लेकिन जितने भी धर्म पिता हैं या दिव्य आत्मा हैं, उनके माता पिता बंधु

सखा सब हैं, तो ये भगवान कैसे हो सकते है!

3. परमात्मा उसे कहा जायेगा जो सर्वोपरी हो

अर्थात् जिसका जन्म मरण के चक्र से कोई नाता न हो। परमात्मा को अजन्मा कहते हैं। अजन्मा के साथ साथ ये भी कहा जाता है कि उसे काल कभी नहीं खा सकता। लेकिन सभी को यहां शरीर छोड़ते और जन्म लेते दिखाया जाता है। तो ये भी उस कसौटी के साथ खरा नहीं उतरा।

4. परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो

जिसको तीनों कालों और तीनों लोकों का ज्ञान हो। जो त्रिकालदर्शी हो। लेकिन आज तक जो सुना व पढ़ा है कि विष्णु जी के पास समस्या का समाधान न होने पर शंकर जी के पास भेजते और वहाँ भी समाधान न हो तो ब्रह्मा जी के पास भेजते हैं।

5. परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों में अनंत हो

जिसकी महिमा के लिए कहते हैं कि धरती को कागज बनाओ, समुंदर को स्याही बनाओ और जंगल को कलम बनाओ, तो भी उसकी महिमा लिखी न जा सके। लेकिन यहां परमात्मा के गुणों को तो छोड़ो, अवगुणों की भी चर्चा है। इसलिए जो गुणों में अनंत होगा, उसमें अवगुण नहीं हो सकता।

तो ये है परमात्मा को परखने की पाँच कसौटी, जिसपर हमें अपनी मान्यताओं को कस कर देखना है कि क्या वे सत्य हैं या असत्य? जल्दी ही अपने सत्य पिता को पहचानो। कहीं उसे पहचानने में देर न हो जाये!

दैहिक धर्म का पर्दा, करता नैतिकता का उल्लंघन

मनुष्य के मन पर दैहिक धर्मों का पर्दा पड़ने से नैतिक मूल्यों का उल्लंघन हो रहा है। विश्व के सभी लोग देह के धर्म से ऊपर उठकर अपने निजी स्वधर्म को पहचान कर एकजुट हो जायें तो आध्यात्मिकता के ज़रिए सामाजिक विसंगतियां समाप्त हो जायेंगी। आधुनिकता के प्रभाव से डगमगाती आध्यात्मिकता को सम्बल देने का अद्भुत उदाहरण ब्रह्माकुमारी संगठन है, जिसका **वर्षों का इतिहास भटके हुए मानव को विकृतियों से छुड़ाकर सत्य मार्ग दिखाने का रहा है।**

- आनंद कृष्ण धाम अध्यक्ष आचार्य महामण्डलेश्वर आनंद चैतन्य महाराज सरस्वती।

संस्कार परिवर्तन का आधार - आध्यात्मिकता

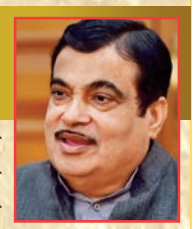

ब्रह्माकुमारीज़ ने जीवन जीने का सही मार्ग बताया है। इस आध्यात्मिक मार्ग से ही संस्कार का परिवर्तन होता है। ब्रह्माकुमारी संस्थान का कार्य ही है अपने साथ दूसरों का भी श्रेष्ठ परिवर्तन करना। यहां की शिक्षा प्रणाली के मूल में ही श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण समाया हुआ है। जिससे ही एक सभ्य समाज का निर्माण होगा। - केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्री माननीय नितिन गडकरी।

आत्मा की सर्वोच्च स्थिति का आधार - राजयोग

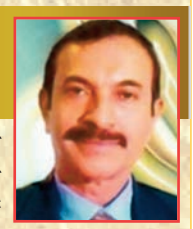

मैंने ये अनुभव किया कि राजयोग का निरंतर अभ्यास करने से हमारा मन शांत हो जाता है तथा व्यर्थ विचार हमें परेशान नहीं करते। राजयोग की यह यात्रा हमें आत्मिक शक्ति प्रदान करती है जिससे आत्मा को अपनी सर्वोच्च स्थिति की अनुभूति होती है। यदि हम एक स्वस्थ मन-मस्तिष्क चाहते हैं और वर्तमान में जीना चाहते हैं, तो हमें प्रतिदिन योगाभ्यास करना ही होगा। इससे हमारी निर्णय शक्ति बेहतर होगी। मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। यहां हृदय की आंतरिक यात्रा से मुझे यह जानने का अवसर मिला कि मैं कौन हूँ और इस ज्ञान ने मेरे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया।

- रामाकृष्णा ए.,हेड आर.ए. एंड सीनियर प्रिन्सीपल साइंटिस्ट्स,डी.आर. डी.ओ.-डी.एफ.आर.एल.,मिनिस्ट्री ऑफ डिफेन्स,जी.ओ.आई.,मैसूर।

नारी शक्ति कर रही नये युग का शंखनाद

ब्रह्माकुमारी संस्था महिलाओं द्वारा संचालित सबसे महान एवं ब्रह्मचर्य का शपथ ग्रहण करने वाली एकमात्र संस्था है। यहां ब्रह्मचर्य का अर्थ ब्रह्मा समान आचरण से है। आसन, प्राणायाम, सिर्फ योगासन हैं, लेकिन चित्त का नियंत्रण राजयोग से ही होता है। इस कार्य के लिए मैं ब्रह्माकुमारीज़ की हृदय से प्रशंसा करता हूँ, जिसका आधार सम्पूर्ण पवित्रता है। मुझे विश्वास है कि आने वाले कुछ समय में ही भारत स्वर्णिम प्रभात की ओर देखेगा। इस संस्था के बहुआयामी कार्यों को देखकर हम निरूत्तर हैं। क्यों, क्योंकि ये एक वृहद् महिला संस्था है, और यही नारी शक्ति एक नये युग का शंखनाद कर रही है। - वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनैतिक विश्लेषक डॉ. वेद प्रताप वैदिक।

परमात्मा ही सत्य है और सत्य ही शिव है

गीता का उद्देश्य हमें अध्यात्म के शिखर पर ले जाना है। गीता एक आध्यात्मिक ग्रन्थ है। आज के भौतिक जगत में मानव उसे ही सत्य मानता है जो उसे दिखाई देता है, जो दिखाई नहीं देता उसे स्वीकार नहीं करता। लेकिन गीता हमें उस सत्य से अवगत करा देती है। परमात्मा ही सत्य है और सत्य ही शिव है। - स्वामी विवेकान्द जी,सिद्धपीठ श्री मंगला काली मंदिर,हरिद्वार।

OM -20- 2018 DELHI_Page 1 and 2 12/28/2018 12:40 PM Page 8

आराध्य के रूप में सभी ने स्वीकारा निराकार को

दिग्भ्रमित संसार में सभी कुछ न कुछ भ्रान्तियों को लेकर उलझे हुए हैं। इन उलझनों को थोड़ा बहुत दिशा देने का काम कुछ दिव्य और श्रेष्ठ आत्माओं ने किया। उन सभी ने एक निराकार ज्योति का ही परिचय दिया क्योंकि उन सभी ने परमात्मा के रूप में सिर्फ निराकार ज्योति परमात्मा का ही अनुभव किया था। वही उन्होंने बताया। लेकिन लागों को निराकार की अनुभूति नहीं थी, इसलिए सभी उन्हीं से जुड़ गये, जिन्होंने परमात्मा के बारे में बताया। यही एक कारण रहा कि सबलोग धर्मों में बंटते चले गये और उनसे ही जुड़ते चले गये। परंतु आज उस निराकार परमात्मा ने आकर खुद अपना सत्य परिचय दिया है कि मैं एक ही हूँ और मैं तुम सबका पिता हूँ।

ईशा ने उस महाज्योति की ओर किया इशारा

ईशा मसीह 'जीज़स क्राइस्ट' ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा कि, गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। उसने भी उस लाइट को परमात्मा का स्वरूप बताया।

उस ज्योति को 'जेहोवा' के नाम से पुकारा

ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा 'जेहोवा'। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ड टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं, का प्रतीक है।

गुरूनानक ने भी माना एक ओंकार निराकार

सिक्खों के धर्म-स्थापक गुरू नानक जी ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मंदिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। गुरू गोविंद सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं, बल्कि विश्व के पूज्य हैं।

पारसियों ने भी किया पारसनाथ को याद

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है कि पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है तो वो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर वहां स्थापित करते हैं।

गिरजाघरों में भी परमात्मा का प्रतीक

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

संग-ए-असवद् भी निराकार शिव का यादगार

मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी शिवलिंग के आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे संग-ए-असवद् कहते हैं। परंतु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है। उसको वे लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं।

जापान, चीन, बेबीलोन में भी निराकार शिव का यादगार

जापान में शिकोनिज़म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊँचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते हैं। उसका नाम दिया है 'चिंकोनसेकी' जिसका अर्थ शांति का दाता है और वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मिस्र में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फिजी देश के निवासी शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' के नाम से पूजते हैं।

निराकार परमात्मा सर्व आत्माओं के परमपिता हैं, जिन्हें कोई ईश्वर, कोई अल्लाह तो कोई गॉड कहता है। जहाँ हिन्दू धर्म में निराकार परमात्मा को ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजा जाता है, वहीं अन्य धर्मों में भी परमात्मा को निराकार ज्योति स्वरूप माना जाता है।

प्रतीकात्मक है तीसरा नेत्र शंकर का

कई जगह पर शिव के मन्दिर में शिवलिंग के सामने शंकर को ध्यान में बैठे दिखाया जाता है। शंकर के नेत्र अध खुले होते हैं। और उसके सिर पर भी एक आँख बनी होती है। प्रतिकात्मक रूप से यह समझना भी बहुत ज़रूरी होता है कि अगर शंकर भगवान है तो वो किसका ध्यान कर रहे हैं। ज़रूर सामने कुछ है जिसका वो ध्यान कर रहे हैं। क्योंकि भगवान तो किसी का ध्यान नहीं कर सकता। भगवान का सब ध्यान करते हैं। फिर शंकर को दूध आदि भी नहीं चढ़ाया जाता है। सबकुछ शिवलिंग पर चढ़ाया जाता है। कहावत भी है कि शंकर अघोरी हैं अर्थात् तपस्वी हैं। यहाँ तपस्या का अर्थ इस बात से भी है, अगर हमको भगवान मिल भी जाए फिर हमें उसे पाने के लिए तपस्या करनी पड़ती है। यही तपस्या ही हमारे बुद्धि रूपी नेत्र को खोलती है। जिसे शंकर का तीसरा नेत्र खुलना कहते हैं। जब यह नेत्र खुल जाता है तब हमारे पुराने संस्कारों रूपी सृष्टि का विनाश हो जाता है। ना कि पूरी सृष्टि का। लोग दिग्भ्रमित हैं, परमात्मा अपनी ही सृष्टि का विनाश कैसे करेंगे! हमें अपने संस्कार बदलने पड़ेंगे।

आप सोचो कितनी भ्रान्ति हैं। अगर हम एक बात कहें कि कोई व्यक्ति ऐसे ही नाग, सांप गले में डाल कर आ जाए, उसके तन पर कपड़े ना हों तो शायद सभी वहाँ से भाग जायेंगे। महाशिवरात्रि हम सभी के तीसरा नेत्र खोलने या शिव द्वारा ज्ञान नेत्र देने का प्रतीक है। हम सभी को अपने पिता शिव को पाने के लिए, उससे प्राप्ति करने के लिए तपस्या करनी होगी। शंकर बनना होगा और अपने जीवन को बदलना होगा।

गोपेश्वरम में श्रीकृष्ण ने किया शिवलिंग का ध्यान

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई तथा युद्ध में कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की।

श्रीराम के भी आराध्य शिव

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम के रूप में स्वयं श्रीराम ने की है। शिव श्रीराम के भी भगवान हैं। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्यों आवश्यकता हुई! ये भी कहा जाता है कि किसी भी कार्य की शुरुआत करने से पहले परमात्मा का स्मरण अति आवश्यक है, ऐसा ही श्रीराम ने भी किया।

पंच संकल्प के साथ मनायें महाशिवरात्रि

इस महाशिवरात्रि पर्व को स्व तथा विश्व के कल्याण के लिए विशेष रूप से पाँच संकल्प लेकर मनायें...

① मन को साफ करो, औरों को माफ करो
कोई हमारी निंदा या विरोध करके अपने ऊपर पाप का बोझ या कर्मों का ऋण चढ़ाता, तो हमें उसे माफ कर देना है। उससे घृणा नहीं करनी, न ही उससे अपने मन को मैला करना है।

② माया की गुलामी को सदा के लिए सलामी
हम मनुष्य आत्मायें माया की, अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के बंधक या गुलाम बने हुए हैं। इन्हीं विकारों के ऋण से छुटकारे के लिए इस त्योहार पर हम इससे मुक्ति पाने का संकल्प लें।

③ रूठना नहीं, रूठाना नहीं
वर्तमान समय हमारी आपात स्थिति है। इसलिए हमें न स्वयं दुःख पाना है, न दूसरों को दुःखी करना है, न रूठना है, न किसी को अपने से या शिव बाबा से रूठाने वाली बात कहनी है। सभी से दूध और चीनी की तरह मिलकर रहना है।

④ मायूसी, उदासी से मुख मोड़ो प्रभु से नाता जोड़ो

बेबसी को छोड़ा जाये और इसके लिए आत्मविश्वास किया जाये। क्योंकि आत्मविश्वास से ही भावना सुदृढ़ होगी। माया से पूर्णतः मुख मोड़कर प्रभु से नाता जोड़ा जाये। ये नाता अपनाने से ही सम्पूर्णता की प्राप्ति होगी तथा विकारों से मुक्ति प्राप्त होगी।

⑤ मन की सच्चाई, बुद्धि की सफाई
जिस प्रकार हम बाहरी सफाई पर ध्यान देते हैं, ऐसे ही इस शिवरात्रि पर हमें सच्चाई के साथ मन बुद्धि की सफाई कर उसे स्वच्छ बनाना है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

OM -20- 2018 DELHI_Page 1 and 2 12/28/2018 12:40 PM Page 9

कथा सरिता

भावनायें ही सर्वोपरि

एक मन्दिर था। उसमें सब लोग पगार पर थे। आरती वाला, पूजा करने वाला आदमी, घण्टा बजाने वाला भी पगार पर था। घण्टा बजाने वाला आदमी आरती के समय भाव के साथ इतना मशगूल हो जाता था कि होश में ही नहीं रहता था। घण्टा बजाने वाला व्यक्ति पूरे भक्ति भाव से खुद का काम करता था। मन्दिर में आने वाले सभी व्यक्ति भगवान के साथ साथ घण्टा बजाने वाले व्यक्ति के भाव के भी दर्शन करते थे, उसकी भी वाह वाह होती थी।

एक दिन मन्दिर का ट्रस्ट बदल गया और नये ट्रस्टी ने ऐसा आदेश जारी किया कि अपने मन्दिर में काम करने वाले सब लोग पढ़े लिखे होने चाहिए। जो पढ़े लिखे नहीं हैं उन्हें निकाल दिया जाएगा। उस घण्टा बजाने वाले भाई को ट्रस्टी ने कहा कि तुम्हारे आज तक का पगार ले लो, अब से तुम नौकरी पर मत आना। उस घण्टा बजाने वाले व्यक्ति ने कहा, साहेब, भले मैं पढ़ा लिखा नहीं हूँ, परन्तु इस कार्य में मेरा भाव भगवान से जुड़ा हुआ है।

ट्रस्टी ने कहा, सुन लो, तुम पढ़े लिखे नहीं हो, इसलिए मैं तुम्हें यहां नहीं रख सकता। दूसरे दिन मन्दिर में नये लोगों को रख लिया गया। परन्तु आरती में आये लोगों को अब पहले जैसा मज़ा नहीं आता था। घण्टा बजाने वाले व्यक्ति की सभी को कमी महसूस होती थी। कुछ लोग मिलकर घण्टा बजाने वाले व्यक्ति के घर गए और विनती की कि तुम मन्दिर आओ।

उस भाई ने जवाब दिया, मैं आऊंगा तो ट्रस्टी को लगेगा कि नौकरी लेने के लिए आया हूँ, इसलिए मैं नहीं आ सकता। वहाँ आये हुए लोगों ने एक उपाय बताया कि मन्दिर के बिल्कुल सामने आपके लिए एक दुकान खोल के देते हैं। वहाँ आपको बैठना है और आरती के समय घण्टा बजाने आ जाना, फिर कोई नहीं कहेगा कि तुमको नौकरी की ज़रूरत है।

उस भाई ने मन्दिर के सामने दुकान शुरू की। वो इतनी चली कि एक दुकान से सात दुकान और सात दुकान से एक फैक्ट्री खोली। अब वो आदमी मर्सिडीज़ से घण्टा बजाने आता था। समय बीतता गया, ये बात पुरानी सी हो गयी। मन्दिर का ट्रस्टी फिर बदल गया। नये ट्रस्ट को नया मन्दिर बनाने के लिए दान की ज़रूरत थी।

मन्दिर के नये ट्रस्टी को विचार आया कि सबसे पहले उस फैक्ट्री के मालिक से बात करके देखते हैं। ट्रस्टी मालिक के पास गया, सात लाख का खर्चा है, फैक्ट्री के मालिक को बताया। फैक्ट्री के मालिक ने कोई सवाल किये बिना एक खाली चेक ट्रस्टी के हाथ में दे दिया और कहा कि चेक भर लो। ट्रस्टी ने चेक भरकर उस फैक्ट्री के मालिक को वापस दिया। फैक्ट्री के मालिक ने चेक को देखा और उस ट्रस्टी को दे दिया। ट्रस्टी ने चेक हाथ में लिया और कहा कि सिग्नेचर तो बाकी है। मालिक ने कहा कि मुझे सिग्नेचर करना नहीं आता है, लाओ अंगूठा लगा देता हूँ। वही चलेगा। ये सुनकर ट्रस्टी चौंक गया और कहा, साहेब आपने अनपढ़ होकर भी इतनी तरक्की की। यदि पढ़े लिखे होते तो कहाँ होते! तो वह सेठ हँसते हुए बोला, भाई मैं पढ़ा लिखा होता तो बस मन्दिर में घण्टा बजाते होता।

सारांश

कार्य कोई भी हो, परिस्थिति कैसी भी हो, आपकी योग्यता आपकी भावनाओं पर निर्भर करती है। भावनायें शुद्ध होंगी तो ईश्वर और सुन्दर भविष्य पक्का आपका साथ देगा।

उठाओ ही नहीं

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक महात्मा रहते थे। आस-पास के गाँव के लोग अपनी समस्याओं और परेशानियों के समाधान के लिए महात्मा के पास आते थे। और संत उनकी समस्याओं और परेशानियों को दूर करके उनका मार्गदर्शन करते थे। एक दिन एक व्यक्ति ने महात्मा से पूछा - गुरूवर, संसार में खुश रहने का रहस्य क्या है?

महात्मा ने उससे कहा कि तुम मेरे साथ जंगल में चलो, मैं तुम्हें खुश रहने का रहस्य बताता हूँ। उसके बाद महात्मा और वह व्यक्ति जंगल की तरफ चल दिए। रास्ते में चलते हुए महात्मा ने एक बड़ा सा पत्थर उठाया और उस व्यक्ति को देते हुए कहा कि इसे पकड़ो और चलो। उस व्यक्ति ने वह पत्थर लिया और वह महात्मा के साथ साथ चलने लगा।

कुछ देर बाद उस व्यक्ति के हाथ में दर्द होने लगा लेकिन वह चुप रहा और चलता रहा। जब चलते चलते बहुत समय बीत गया और उस व्यक्ति से दर्द सहा नहीं गया तो उसने महात्मा से कहा कि उसे बहुत दर्द हो रहा है। महात्मा ने कहा कि इस पत्थर को नीचे रख दो। पत्थर को नीचे रखते ही उस व्यक्ति को बड़ी राहत मिली।

तब महात्मा ने उससे पूछा- जब तुमने पत्थर को अपने हाथ में उठा रखा था तब तुम्हें कैसा लग रहा था। उस व्यक्ति ने कहा - शुरू में दर्द कम था तो मेरा ध्यान आप पर ज़्यादा था पत्थर पर कम था। लेकिन जैसे जैसे दर्द बढ़ता गया मेरा ध्यान आप पर से कम होने लगा और पत्थर पर ज़्यादा होने लगा और एक समय मेरा पूरा ध्यान पत्थर पर आ गया और मैं इससे अलग कुछ नहीं सोच पा रहा था।

तब महात्मा ने उससे दोबारा पूछा - जब तुमने पत्थर को नीचे रखा तब तुम्हें कैसा महसूस हुआ?

इस पर उस व्यक्ति ने कहा- पत्थर नीचे रखते ही मुझे बहुत राहत महसूस हुई और खुशी भी महसूस हुई।

तब महात्मा ने कहा कि यही है खुश रहने का रहस्य! इस पर वह व्यक्ति बोला - गुरूवर, मैं कुछ समझा नहीं।

तब महात्मा ने उसे समझाते हुए कहा - जिस तरह इस पत्थर को थोड़ी देर हाथ में उठाने पर थोड़ा सा दर्द होता है, थोड़ी और ज़्यादा देर उठाने पर थोड़ा और ज़्यादा दर्द होता है और अगर हम इसे बहुत देर तक उठाये रखेंगे तो दर्द भी बढ़ता जायेगा। उसी तरह हम दुःखों के बोझ को जितने ज़्यादा समय तक उठाये रखेंगे हम उतने ही दुःखी और निराश रहेंगे। यह हम पर निर्भर करता है कि हम दुःखों के बोझ को थोड़ी सी देर उठाये रखते हैं या उसे ज़िंदगी भर उठाये रहते हैं। इसलिए अगर तुम खुश रहना चाहते हो तो अपने दुःख रूपी पत्थर को जल्दी से जल्दी नीचे रखना सीख लो और अगर संभव हो तो उसे उठाओ ही नहीं।

एक बार, दूसरों की नज़र से

एक व्यक्ति का घर शहर से दूर एक छोटे से गाँव में था। उसके घर में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं थी। लेकिन फिर भी वो खुश नहीं रहता था। उसे लगता था कि शहर की ज़िंदगी अच्छी है। इसलिए एक दिन उसने गाँव के घर को बेचकर शहर में घर लेने का फैसला किया। अगले ही दिन उसने शहर से अपने दोस्त को बुलाया, जो रियल स्टेट में काम करता था। उसने अपने दोस्त से कहा- तुम मेरा ये गांव का घर बिकवा दो और मुझे शहर में एक अच्छा सा घर दिलवा दो। उसके दोस्त ने घर को देखा और कहा - तुम्हारा घर इतना सुन्दर है। तुम इसे क्यों बेचना चाहते हो? अगर तुम्हें पैसों की जरूरत है तो मैं तुम्हें कुछ पैसे दे सकता हूँ। उस व्यक्ति ने कहा - नहीं नहीं मुझे पैसों की ज़रूरत नहीं है।

मैं इस घर को इसलिए बेचना चाहता हूँ क्योंकि ये घर शहर से बहुत दूर है। यहाँ पर शहर की तरह पक्की सड़कें भी नहीं हैं। यहाँ के रास्ते बहुत ही उबड़-खाबड़ हैं। यहाँ पर बहुत सारे पेड़ पौधे हैं। जब हवा चलती है तो पूरे घर में पत्ते फैल जाते हैं। ये गाँव पहाड़ों से घिरा हुआ है। अब तुम ही बताओ मैं शहर क्यों न जाऊँ?

उसके दोस्त ने कहा - ठीक है, अगर तूने शहर जाने का सोच ही लिया है तो मैं जल्दी ही तुम्हारे इस घर को बिकवा दूंगा। अगले ही दिन सुबह के समय वह व्यक्ति अखबार पढ़ रहा था। उसने अखबार में एक घर का विज्ञापन देखा। शहर की भीड़ भाड़ से दूर, पहाड़ियों से घिरा हुआ, हरियाली से भरा हुआ, ताज़ी हवा युक्त एक सुन्दर स्थान पर बसा अपने सपनों का घर। घर खरीदने के लिए नीचे दिए गए नंबर पर सम्पर्क करें। उस व्यक्ति को विज्ञापन देखते ही घर पसंद आ गया। उसने जब उस नंबर पर फोन किया तो वो हैरान रह गया। क्योंकि ये विज्ञापन उसी के घर का था। यह जानकर वह खुशी से झूम उठा। उसने अपने दोस्त को फोन लगाया और कहा - मैं तो पहले से ही अपने पसंद के घर में रह रहा हूँ। इसलिए तुम मेरा घर किसी को मत बेचना, मैं यहीं रहूंगा। इस कहानी से हमें ये समझ मिलती है कि अधिकतर लोगों को अपने जीवन से शिकायत होती है। वे सोचते हैं कि उनके जीवन में दुःख ही दुःख भरे पड़े हैं। ऐसे लोगों को दूसरे लोगों की ज़िन्दगी बहुत ही अच्छी लगती है। लेकिन आप ऐसा कभी भी मत करना। कुछ भी करने से पहले एक बार अपनी ज़िंदगी को दोस्तों की नज़रों से ज़रूर देखना। अगर आपने कभी भी अपनी ज़िंदगी को दूसरों की नज़रों से देखा तो आप पायेंगे कि आपकी ज़िन्दगी दूसरों से बहुत ही अच्छी है।

हरदुआगंज-उ.प्र.। आयुष मेला में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए विधायक दलवीर सिंह। साथ हैं क्षेत्रीय चिकित्सा अधिकारी जुगल किशोर राना, ब्र.कु. कमलेश बहन तथा अन्य।

नरवाना-हरियाणा। ओडिशा के राज्यपाल प्रो. गणेशी लाल जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. निशा, ब्र.कु. सुभाष तथा ब्र.कु. ईश्वर। साथ हैं राष्ट्रीय सेवक संघ के जिला संघ चालक डॉ. विनोद गुप्ता, आर.एस.एस. के जिला महासचिव शशि शर्मा तथा अन्य।

होडल-हरियाणा। सेवाकेन्द्र के सिल्वर जुबली कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से ब्र.कु. इंदिरा,हसनपुर, ब्र.कु. उषा,होडल सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. अनुसुइया,राष्ट्रीय संयोजिका,युवा प्रभाग, ब्र.कु. शुक्ला,हरिनगर तथा प्रताप अरोड़ा,डिस्ट्रिक्ट मैनेजर,इंडियन पेट्रोल पम्प।

भुवनेश्वर-यूनिट 8। योग भट्ठी कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. दुर्गेश नंदिनी तथा अन्य।

आगरा-शास्त्रीपुरम। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. शीला, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. सरिता, अविनाश चन्द्र अग्रवाल, प्रो. डॉ. के.के. गौर, ब्र.कु. विभोर तथा अन्य।

OM -20- 2018 DELHI_Page 1 and 2 12/28/2018 12:40 PM Page 10

बच्चों की परवरिश का तरीका

मनोविज्ञान कहता है कि कोई भी बच्चा जब एक से सात साल की उम्र का होता है तो उसका भावनात्मक मन बहुत ही शक्तिशाली होता है। वह हरेक चीज़ को देखकर या सुनकर सीखता है। अगर शुरू से इन बातों पर ध्यान दिया जाये तो बच्चों को हम एक बहुत शक्तिशाली परवरिश दे सकते हैं। लेकिन (इग्नोरेंस) इन बातों से अन्जान हम सभी परवरिश ठीक से नहीं दे पा रहे हैं।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

कोई भी चीज़ की शुरुआत छोटेपन से होती है। कोई भी बच्चा घर में जन्म लेता है तो वह आत्मा तो 80 साल वाले शरीर को छोड़कर ही आई है। इन 80 सालों में कितने सारे उल्टे पुल्टे अनुभव किये होंगे। अब वही आकर आपके घर में बच्चा बना, एक नया शरीर लिया। हम सिर्फ छोटे शरीर को देखते हैं, लेकिन संस्कार तो आत्मा लेकर ही आई है ना! अगर यह हमको ध्यान में रहे तो जो उम्मीदें, आशाएं उनकी पिछले जन्म में पूरी नहीं हुईं या कुछ अधूरा रह गया हो, तो उसे पूरा किया जा सकता है। इसके लिए थोड़ी सी अवेयरनेस चाहिए।

आप देखो जैसे कोई बच्चा आपके पास आए और आप उससे उपेक्षित व्यवहार करो, तो बाद में बड़ा होकर वो झगड़ा करना सीख जायेगा। ये हम आपको, आपके व्यवहार को दर्शा रहे हैं, अगर आप ऐसा करेंगे तो ऐसा होगा। अगर बच्चा शुरू से ही आलोचना के बीच में ही जीता है तो वो बच्चा बड़ा होकर आरोप लगाना सीख जाता है।

उदाहरण के लिए जैसे हमने कहा कि तुझे तो बोलना भी नहीं आता, तू तो कुछ सीख भी नहीं सकता, ये बातें उसको चुभती हैं और बाद में वो यह चीज़ आप पर भी डालना शुरू कर देगा। अगर कोई बच्चा हँसी का पात्र है तो बाद में वह शरमाना सीख जाता है, उसकी छोटी छोटी गलती पर जब कोई हँसता है तो वो शरमायेगा। और ये एक दिन में नहीं होता लेकिन एक से सात साल के बीच में उसके साथ जो कुछ भी घट रहा होता है वो उसका संस्कार बन जाता है। इसी तरह से अगर बच्चे को सहनशीलता के साथ पाला जाये तो वो धैर्यता का गुण धारण कर लेता है। अगर उसको हर कार्य के लिए बार बार प्रोत्साहित किया जाये तो वो आत्मविश्वास से भर जायेगा। अगर बच्चे को प्रशंसा के साथ परवरिश मिले तो वो बच्चा प्रशंसा करना सीख जायेगा।

अगर इसी तरह बच्चे को सच्चाई, सफाई व ईमानदारी सिखाई जाये तो आगे चलकर वो न्याय करना सीख जायेगा। ये सब बातें एक दिन की नहीं हैं, उसको नित्य प्रति हमें बच्चों के साथ करना पड़ता है। अगर कोई बच्चा हमेशा सुरक्षित रहा हो, तो आगे चलकर वो विश्वास करना सीख जाता है। अगर उसे हर कार्य में सहमति मिली हो माता पिता से, वो स्वयं से प्यार करना सीख जायेगा। इतना अटेन्शन चाहिए किसी को पालने के लिए। हम सभी का कहीं न कहीं ये अनुभव है कि मेरे मम्मी पापा ने यह हमें नहीं सिखाया। हमेशा सभी लोग मेरे पर हँसते थे, मज़ाक उड़ाते थे और धीरे-धीरे मैं भी ऐसा हो गया। इससे तो यह बात सिद्ध है कि हम अपने बच्चे को जैसा बनाना चाहें वैसा बना सकते हैं। बस एक अच्छे माहौल को विकसित करने की आवश्यकता है।

राजयोग से सर्व समस्याओं का समाधान

मन की बातें

- राजयोगी ब.कु. सूर्य

प्रश्न : मेरा भविष्य क्या है? यदि उसकी मुझे थोड़ी सी भी भनक लग जाये कि हाँ यही है तो मैं सही सही दिशा पर चलूँ, सही सही मेरे प्रयास हों और मैं कहीं भी भटकूं नहीं। क्या इस चीज़ को जाना या समझा जा सकता है कि मैं सही दिशा पर चल रहा हूँ या नहीं?

उत्तर : देखिए, इसके लिए मेहनत की बहुत ज़रूरत है। बिल्कुल हमें पॉज़ीटिव होना होगा। जो व्यक्ति नेगेटिविटी से बिल्कुल पूरी तरह मुक्त हो गया हो, उसके पॉज़ीटिव चिंतन उसके भविष्य को अवश्य सुन्दर बनायेंगे। और जिस व्यक्ति में नेगेटिविटी का युद्ध साथ साथ चल रहा हो, तो उसे तो बहुत सोच समझ कर ही कदम उठाना होगा भविष्य के लिए। तो भविष्य से हम तब जुड़ जाते हैं जब हम प्योर एनर्जी, पॉज़ीटिव एनर्जी उधर भेजने लगते हैं। तो दोनों चीज़ें जो हैं आपस में अट्रेक्ट होती हैं। उससे हमारे मन का विचार या मन का निर्णय तदनुसार ही हो जाता है। इसमें मेडिटेशन सम्पूर्ण रूप से सहायक है क्योंकि मेडिटेशन से मनुष्य का चित्त शांत होने लगता है और ये भविष्य भी हमारे इस ब्रेन में पूर्व अंकित रहता ही है। तो उसको हम कैच कर सकते हैं, उस अनुसार निर्णय ले सकते हैं।

प्रश्न : अब तक मैं 4-5 जगह जॉब के लिए ट्राई कर चुकी हूँ। हर जगह मुझे गंदी नज़र और इनडायरेक्टली गलत डिमांड का सामना करना पड़ा। घर की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं है और जॉब के पली हुई हूँ इसलिए इस तरह की जो बातें हैं मुझे डिस्टर्ब करती हैं। कृपया बताएं कि ऐसी सिचुएशन में क्या किया जाये?

उत्तर : पहले तो आपको बहुत अच्छा स्वमान अपना बढ़ाना पड़ेगा। मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं इष्ट देवी हूँ। तो आपकी ओर कुदृष्टि जो लोगों की होती है आप उससे बच जायेंगी धीरे धीरे। और दूसरी चीज़ ये कि आपको मानसिक रूप से बहुत स्ट्रॉन्ग होना पड़ेगा कि आपकी इच्छा के विरूद्ध तो कोई कुछ कर ही नहीं सकता। और अगर आपके प्रति कोई कुदृष्टि रखे तो आप उससे अप्रभावित भी रहेंगी। जॉब छोड़ने की ज़रूरत नहीं हैं बार बार, आप उस चीज़ को ठीक कर सकती हैं। इसके लिए पुनः 21 दिन की योग भट्ठी कर लें। एक घंटा रोज़ योग। 21 दिन मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। इन दो संकल्पों के साथ 1 घंटा योग करें और ये विज़न रखें कि मुझे

हाथरस-उ.प्र.। मधुमेह रोगियों के लिए आयोजित 'मधुमेह जागृति शिविर' के पश्चात् समूह चित्र में इनर व्हील महिला संगठन की अध्यक्षा राधा गावर, सचिव दीपा चड्ढा, ज्योति बहन, ब्र.कु. शान्ता, डॉ. वल्सलन नायर, डॉ. हर्ष गर्ग तथा अन्य।

प्रश्न : मैं अपने सेंटर में आने वाले भाई बहनों की संख्या में वृद्धि करना चाहती हूँ। कैसे मुझे योग का अभ्यास करना चाहिए?

उत्तर : देखिए, ये बहुत अच्छी बात है कि योग बल से आत्माओं में वृद्धि, ब्राह्मणों में वृद्धि, देवकुल की आत्माओं को हमें आकर्षित करना है तो आपको 21 दिन का एक प्रोग्राम बनाना है और अगर आप टीचर बहनों का भी साथ ले लें तो बहुत ही अच्छा होगा। क्योंकि पालना तो उन्हें ही करनी है और वो जितनी योग्य होंगी और जितना इस बात को समझेंगी ठीक से, तो सेवा की वृद्धि सहज हो जायेगी। अन्यथा कहीं कहीं गड़बड़ी से सेवा नेगेटिव वे में चली जाती है। आने वाले 100-150 थे, अब 40-50 ही आ रहे हैं, और कम होते जा रहे हैं। तो पालना करने वालों को पालना भी अच्छी करनी चाहिए क्योंकि माया का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। और जहाँ तक रहा देव कुल की आत्माओं को समीप लाना, तो 21 दिन का आप प्रोग्राम बनायेंगी तो उसमें इन स्वमानों के साथ बैठें कि मैं विश्व कल्याणकारी हूँ, पूर्वज हूँ, इष्ट देवी हूँ। फिर एक घंटा योग करेंगे और योग के बाद संकल्प से आह्वान करें कि हमारे चारो ओर जो भी देव कुल की आत्मायें हैं वो सब ज्ञान लेने के लिए आ जाओ। ये आपके परमपिता आपको पुनः बुला रहे हैं, आ जाओ। तो आत्माओं में आकर्षण होने लगेगा। 21 दिन लगातार ये करेंगे तो बहुत अच्छा होगा। लोग आयेंगे और उन्हें अच्छी तरह से कोर्स देना और उन्हें अच्छी तरह से पालना देना, उनकी समस्याओं का समाधान करना, ये निमित्त आत्माओं का कार्य होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

आने वाले खुशी के मौके को सहेजें

एक गृहस्थ के जीवन में छह बार खुशी के अवसर आते हैं और उसी गृहस्थी में छह मौके पर हम अपनी खुशियों को विदा भी कर देते हैं। ज़रा इन अवसरों पर ध्यान दीजिए। पहली बार आप जन्मदाता होते हैं। और उस समय सभी माता-पिता घोर लापरवाह रहते हैं। उसके बाद पालक बनते हैं। इस चरण में आप लालन-पालन करने वाले होते हैं और बावले हो जाते हैं। तीसरे चरण में माता-पिता निर्णायक बन जाते हैं। बच्चे बड़े हो रहे हैं, उन्हें किस स्कूल में भेजना है, उनके भविष्य के लिए क्या निर्णय

लेना है..यहां से चिंता शुरू हो जाती है। चौथा चरण आता है जब बच्चे जवान होते हैं। इस दौर से बच्चे माता-पिता से छूटकर उनको बाहर की हवा लग चुकी होती है और यहीं से माता-पिता के जीवन में तनाव प्रवेश कर जाता है। पांचवें चरण में माता-पिता भागीदार बन जाते हैं। बेटी हो तो दामाद ढूंढ़ते हैं, बेटा हो तो बहू की तलाश में लग जाते हैं और खुशियां कलह बनने लगती हैं। छठा चरण आता है जब बच्चे काम धंधे के कारण दूर चले जाते हैं और माता-पिता उदासी में घिरे बिल्कुल अकेले से रह जाते हैं। इन छह चरण में यदि सावधानी रखी जाए तो जो खुशी संतान के जन्म पर आई वह अंत तक बनी रहेगी। इस दौरान खुशी इसलिए बचाकर रखिए कि माता-पिता के शरीर से जो पॉज़ीटिव वाइब्रेशन्स निकलते हैं वे बच्चों को भी आज्ञाकारी, विनम्र और संस्कारी बनाएंगे। वरना अपनी ओर आती हुई खुशी आप अपने ही कर्मों से मोड़ देंगे और गृहस्थी बोझ लगने लगेगी।

OM -20- 2018 DELHI_Page 1 and 2 12/28/2018 12:40 PM Page 11

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

कल्पनाओं के संसार में सभी लोग हर वक्त रहते हैं। मतलब उनका खाना, पीना, सोना, जागना सबकुछ कल्पना में ही है। लेकिन उस कल्पना के पीछे भी तो संकल्प शक्ति ही काम कर रही होती है। जैसे मुझे आज यह खाना है, कल यह काम करना है, ऐसे ऐसे छोटी छोटी कल्पनाएं हमारे संकल्प के अस्तित्व को दर्शाती हैं। और तभी आप यह कर भी पाते हो।

इसी तरह हमारा जीवन कल्पनाओं से भरा हुआ है। इस जीवन का हर पल, हर क्षण हमने कल्पना करके ही बिताया है। लेकिन हमारा सिर्फ उस पर ध्यान नहीं है। यहाँ इस बात से मतलब यह होता है कि हम काम तो कर रहे हैं, लेकिन यह ध्यान नहीं कि इस काम की शुरुआत कब हुई। उसके पीछे का साइंस यह है कि हम छोटे-छोटे सूक्ष्म संकल्प करते रहे। जब उसने अपना रूप ले लिया तो आपको दिखाई देने लग जाता है। तो इसकी शुरुआत कितने दिन पहले से हुई होगी।

जब हम छोटे- छोटे संकल्प करके अपनी कल्पनाओं को साकार रूप लेते हुए देखते हैं तो एक आत्म विश्वास सा जगता है कि हम कुछ भी कर सकते हैं। जैसे कोई चोट लग जाये आपको या हड्डी टूट जाये तो, अगर आप 5-6 लोगों से उनका खुद का अनुभव पूछेंगे कि आपकी कितने दिन में रिकवरी हुई, तो सभी अपना-अपना, अलग-अलग बतायेंगे। कोई कहेगा कि मेरे तीन महीने, कोई

कहेगा मेरे दो महीने। अब यह दो महीने, तीन महीने कहाँ से आया? ज़रूर उसने किसी की सुनके ऐसी कल्पना की कि उनका इतने दिन में ठीक हुआ है ना, तो मुझे भी इतने दिन तो लग ही जायेंगे। हो सकता था कि आपकी हड्डी कम दिन में भी जुड़ सकती थी। लेकिन आपने यहाँ ऐसी कल्पना कर ली जिससे हड्डी दो महीने के बाद ही जुड़ेगी। ऐसी बहुत पुरानी-पुरानी मान्यताएं, परम्पराएं हमारे ज़हन में हैं, जिससे हमारी कल्पना भी वैसी ही होती है। नहीं तो संकल्प में वो बल है जिससे एक सेकण्ड में चमत्कार हो सकता है। ऐसे ही एक रोग के बारे में किसी ने कहा कि इसकी रिकवरी में कम से कम छह महीने लगते हैं।

लेकिन किसी ने अपने अनुभव में अपने इन संकल्पों को बदला और कहा कि मैं तो एक महीने में ठीक होकर दिखाऊंगा। और वो ठीक हो गया। अब इसमें रहस्य ये है कि जैसे ही आपने अपनी कल्पना में दूसरे संकल्प डाले, उसी हिसाब से सारी चीज़ें जो उसको ठीक करने के लिए चाहिए, वो आ जायेंगी। बहुत सारे सहयोगी भी उसी हिसाब से आपको मिल जायेंगे। अगर आपने छह महीने की संकल्पना कर ली, तो उस हिसाब से आपकी कोशिकाएं, आपके अंग काम करना शुरू करेंगे। यही सब लोग गलती करते आ रहे हैं कि डॉक्टर ने बताया है कि डेढ़ महीने में रिकवरी होगी। तो उसी हिसाब से, सबकुछ हम करने लग जाते हैं। क्या डॉक्टर विधाता है। वो भी तो एक इंसान है। उसने जो कहा, वो पत्थर की लकीर तो नहीं है। और हम वही मान कर चलते आए हैं। क्योंकि आज हमारी बुद्धि बहुत कमज़ोर है कि हम किस पर विश्वास करें। तो हम डॉक्टर, वैद्य, हकीम पर कर लेते हैं। तो क्यों ना अपनी संकल्पनाओं को ऐसा बना दो जिसमें आपका सबकुछ अधिक से अधिक हो। और जीवन को नई कल्पना के साथ जीना सीखो। इसकी शुरुआत आज से ही करें।

रानीवाड़ा-राज.। माननीय मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया के शहर आगमन पर उनका अभिवादन करते हुए ब्र.कु. सुनीता तथा ब्र.कु. मालती। साथ हैं जालोर सिरोही के सांसद देवजी पटेल, विधायक नारायण सिंह देवल तथा अन्य।

झोझूकलां-कादमा(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सेठ किशनलाल मंदिर में आयोजित 'सुविचार से सुनहरा संसार' कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. उषा को अभिनंदन पत्र प्रदान कर सम्मानित करते हुए सरपंच दलवीर सिंह गांधी तथा ग्राम विकास मंडल अध्यक्ष राजेन्द्र यादव। साथ हैं ब्र.कु. वसुधा व अन्य।

कूच बेहर-प. बंगाल। बी.एस.एफ. के डी.आई.जी. सी.एल. बेलवा साहब के ट्रान्सफर फेयरवेल कार्यक्रम में आमंत्रित किये जाने पर उनका सम्मान कर ईश्वरीय संदेश व सौगात देने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. सम्पा, कमान्डिंग ऑफिसर, मेजर बी.के. स्वपन, बी.के. सिबू तथा अन्य ऑफिसर्स।

नेपाल-काठमाण्डू। 'महिला-मूल्यनिष्ठ समाज की पथ प्रदर्शक' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी,अध्यक्षा,महिला प्रभाग, ब्र.कु. सविता,मुख्यालय संयोजिका,महिला प्रभाग, ब्र.कु. राज,सेवाकेन्द्र संचालिका, नेपाल की महिला एवं बाल विकास मंत्री तथा अन्य।

आबू रोड-राज.। शिवसेना के युवा लीडर आदित्य ठाकरे को ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् मुख्यालय के ज्ञानसरोवर में होने वाले यूथ रिट्रीट में आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. गीता। साथ हैं ब्र.कु. हरीश।

दिल्ली-लोधी रोड। इंडिया लि.-सेल,भारत सरकार की महारत्न कंपनी में कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में कंपनी के चेयरमैन ए.के. चौधरी के साथ ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. गिरिजा तथा अन्य।

वरनाला-पंजाब। 'श्रीमद्भगवद् गीता' विषय पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम के दौरान ट्राइडेंट इंटरनेशनल इंडस्ट्री,बरनाला में 'पॉज़ीटिव थिंकिंग एंड स्ट्रेस मैनेजमेंट' विषय पर सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. उषा,माउण्ट आबू। सभा में उपस्थित हैं एस.के. अग्रवाल,जिला एवं सत्र न्यायाधीश,फिरोज़पुर एंड फाज़िल्का, डॉ. त्रिलोकी,सीनियर आई सर्जन तथा अन्य गणमान्य लोग।

मंडी-हि.प्र.। एडमिनिस्ट्रेटर्स, पुलिस ऑफिसर्स तथा स्टाफ के लिए आयोजित 'लिविंग ए लाइफ ऑफ हैप्पीनेस थ्रू स्मॉल एक्ट्स ऑफ गुडनेस' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. राम प्रकाश सिंघल,यू.एस.ए., ब्र.कु. शीला, ब्र.कु. नरेन्द्र, ए.सी. टू डी.सी. राज ठाकुर तथा एडिशनल एस.पी. पुनीत रघु।

निरसा-धनबाद(झारखण्ड)। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित रैली में उपस्थित हैं ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. शक्ति, ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. डॉ. अवंतिका तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-7(2018-2019)

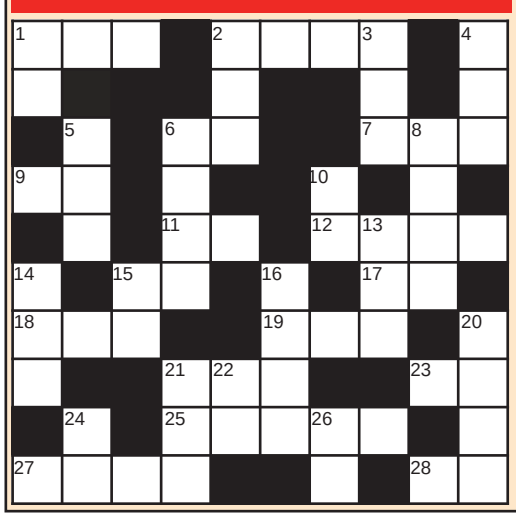

ऊपर से नीचे

1. श्रीकृष्ण...का फर्स्ट प्रिन्स है (2)
2. महान आत्मा, बच्चे तो...समान होते हैं (3)
3. खोज, अनुसंधान, अन्वेषण (3)
4. निर्भय, साहसी (3)
5. मुरली के प्वाइंट्स का विचार सागर.... जरूर करना है (3)
6. पूजा, उपासना (4)
8. औजार, अस्त्र-शस्त्र (4)
10. नाव, किश्ती (2)
13. घर, गृह, आवास (3)
14. पति, प्रियतम, दूल्हा (3)
15. गौरव, गर्व, मर्यादा (2)
16. मुख्यालय, प्रधान केन्द्र, बाप आये हैं बच्चों को नई ...देने (4)
20. एक मिनट की....पन की स्थिति सारे दिन की थकान मिटा देती है (4)
21. प्रतिलिपि, अनुसरण (3)
22. दूल्हा, आशीर्वाद, चयन (2)
24. जिगर,...कहे बाबा तुझे देखता रहूँ (2)
26. विकट, भयंकर, विकराल, घना (2)

बाएं से दाएं

1. बाप हमें दैवी...देते हैं, स्वशासन (3)
2. शक्तिशाली, प्रगाढ़, बलवान (4)
6. ...परमात्मा अलग रहे बहुकाल (2)
7. छोड़...का शोर चलो हम चलें गांव की ओर (3)
9. आत्मा रथी है, शरीर...है (2)
11. ज़मीन, धरती, भूमि (2)
12. सफलता, विजय (4)
15. आगमन, पधारना (2)
17. निराकार बाबा आ जाओ हमारी जैसी...में (2)
18. जुबान, जिह्वा, जीभ (3)
19. संसार, जगत, दुनिया (3)
21. नौ प्रकार, नौ भागों में,...भक्ति से साक्षात्कार होते हैं (3)
23. विनाश, नष्ट, समाप्त (2)
25. महापात्र, धामा खाने वाले ब्राह्मण (5)
27. समाचार, खबर (4)
28. ...सो लक्ष्मी, स्त्री (2)

-ब्र.कु. राजेश, शान्तिवन

OM -20- 2018 DELHI_Page 1 and 2 12/28/2018 12:40 PM Page 12

हर्षोल्लास से मनाया गया ओ.आर.सी. का अठारहवां वार्षिकोत्सव

ब्रह्माकुमारीज़ ला रही लोगों के विचारों में शुद्धता

दादी रतनमोहिनी के साथ केक काटते हुए ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. बृजमोहन, मेयर मधु आचार्य तथा वरिष्ठ ब्रह्माकुमारी बहनें।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ओम शांति रिट्रीट सेंटर ने आध्यात्मिक ऊर्जा की तरंगों को सारे विश्व में फैलाते हुए अपने 18वें वर्ष में प्रवेश किया। सेंटर का 18वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कुदरत की गोद में जो बसता गुलिश्ता प्यारा, वो आशियां हमारा, ओ.आर.सी. हमारा... गीत पर मार्मिक प्रस्तुति ने सबको भाव-विभोर कर दिया।

मुख्य अतिथि गुरूग्राम की मेयर मधु आचार्य ने कहा कि संस्था लोगों के अंदर शुद्ध एवं श्रेष्ठ विचारों का संचार कर मन को शक्तिशाली बनाने का कार्य कर रही है। उन्होंने लोगों से अपील की कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बताई जा रही शिक्षाओं को जीवन में अपनाएं, क्योंकि आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों से ही समस्याओं का सामना कर सकेंगे।

दिल्ली पुलिस के अतिरिक्त आयुक्त ऋषिपाल ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था वास्तव में विश्व परिवर्तन का श्रेष्ठ कार्य कर रही है। उसमें भी विशेष राजधानी दिल्ली के समीप बना ये सुंदर परिसर अपने आध्यात्मिक प्रकम्पनों से चारो ओर एक शक्तिशाली वातावरण निर्मित कर रहा है। उन्होंने कहा कि मैं जब भी इस परिसर में आता हूँ तो मुझे यहां पर सभी के चेहरों से अलौकिकता, सौम्यता और शालीनता की झलक अनुभव होती है। जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।

- **ओ.आर.सी. की अठारह विशेषताओं को बहुत ही सुंदर फूलों के माध्यम से व्यक्त किया गया।**
- **पवित्रता हमारा निजी गुण है**
- **आध्यात्मिकता में निहित सर्व समस्याओं का समाधान**
- **यहां के आध्यात्मिक प्रकम्पनों से होता शक्तिशाली वातावरण का निर्माण**
- **संस्कार परिवर्तन से विश्व परिवर्तन**

इस अवसर पर विशेष रूप से माउण्ट आबू से आईं ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि शान्ति की अनुभूति के लिए हमें स्वयं के वास्तविक स्वरूप को जानने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि पवित्रता हमारा निजी गुण है। जितना हम अपने शुद्ध स्वरूप में स्थित होते हैं, उतनी ही शान्ति की अनुभूति हमें सहज होती है।

जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि हमें गुणों का स्वरूप बनकर दूसरों को प्रेरणा देनी है। हमें सिर्फ स्वयं के जीवन को ही सुंदर नहीं बनाना है, बल्कि सारे विश्व को सुंदर बनाना है। उन्होंने कहा कि जब हमारे संस्कारों में परिवर्तन आयेगा, तब ही विश्व परिवर्तन होगा।

ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी ने सेंटर के द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी देते हुए कहा कि ओ.आर.सी. में सरकार की तरफ से भी अधिकारियों के लिए अनेक मैनेजमेंट के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

संस्था के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का मुख्य उद्देश्य श्रेष्ठ समाज की पुनः स्थापना करना है। उन्होंने कहा कि यही भारत पहले स्वर्ग कहलाता था, जहां देवताएं निवास करते थे। आज पुनः उन मूल्यों की जागृति से सारे विश्व को सतयुग व स्वर्ग बनाना है।

इस अवसर पर संस्था के कई अन्य वरिष्ठ भाई-बहनों ने भी अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त कीं। कार्यक्रम में पाँच हज़ार से भी अधिक लोगों ने शिरकत की।

गुस्सा करता हमारी शक्तियों को क्षीण

'सेलिब्रेट एवरी मोमेन्ट' विषय पर दो दिवसीय कार्यक्रम

पटियाला-पंजाब। 'सेलिब्रेट एवरी मोमेन्ट' विषय पर आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा एवं प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि गुस्सा हमें अंदर से खोखला करता है, लेकिन हम इसे एक शक्ति समझते हैं। असली शक्तियां धैर्य और सहिष्णुता है। हर इंसान शांति, खुशी, शक्ति, अच्छे व्यवहार, प्रेम और सम्बंधों में सम्मान की कामना करता है। उन्होंने कहा कि हम अपने मन की स्थिति के लिए स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हमारे जीवन में विपत्तियां होंगी, लेकिन उन्हें पार करना, ये हमारे हाथ में है। राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से हम सर्वोच्च शक्ति, सर्वोच्च आत्मा, सर्वोच्च पिता के साथ सभी सम्बंधों की अनुभूति कर सकते हैं। उन्होंने जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए जागरुक जीवन और मेडिटेशन की प्रासंगिकता के बारे में बताया। उन्होंने पंजाब में भारी नशीली दवाओं के अनियंत्रित दुरुपयोग की समस्या को हल करने में मेडिटेशन की भूमिका पर बल दिया। विशेष अतिथि फिल्म एक्टर तथा अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज़ शो के होस्ट सुरेश ओबरॉय ने अपना अनुभव साझा करते हुए कहा कि हमारी खुशी हमारे हाथ में ही है, बस हमें स्वयं को बदलने की ज़रूरत है।

दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. शांता, मिनिस्टर विजय इंदर सिंगला, सुरेश ओबरॉय तथा अन्य अतिथि गण।

कैबिनेट मिनिस्टर विजय इंदर सिंगला तथा क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. शांता ने पंजाब के नागरिकों की ओर से ब्र.कु. शिवानी तथा सुरेश ओबरॉय का स्वागत करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सामाजिक सुधार के लिए ऐसे अविश्वसनीय कार्यों की सराहना की।

- **ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पंजाबी युनिवर्सिटी कैम्पस में कार्यक्रम का विशाल और भव्य आयोजन**
- **विपत्तियों को पार करना हमारे ही हाथ में - शिवानी**
- **खुशी की प्राप्ति के लिए स्वयं को बदलने की ज़रूरत - ओबरॉय**

पंजाबी विश्वविद्यालय के उप कुलपति डॉ. बी.एस. घुमन ने विश्वविद्यालय परिसर में आध्यात्मिकता की ताज़ी हवा लाने के लिए ब्र.कु. शिवानी तथा ब्रह्माकुमारीज़ को धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम में पंजाब के संजीव गर्ग,राज्य सूचना आयुक्त, राजेश, विशेष कर्त्तव्य अधिकारी, मुख्यमंत्री, के.के. शर्मा,अध्यक्ष, पंजाब रोड ट्रान्सपोर्ट कॉर्पोरेशन, संजीव शर्मा,महापौर,पटियाला, डी.पी. सिंगला,न्यायाधीश, सरदार मनदीप सिंह सिद्धू,वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सहित कई महानुभाव शरीक हुए। मंच संचालन ब्र.कु. डॉ. राजेश ने किया।

कार्यक्रम में लगभग दस हज़ार लोग, जिसमें पटियाला के प्रशासन, नगर पालिका, पुलिस, न्यायपालिका, चिकित्सा, शिक्षण संस्थान के सदस्यों सहित छात्र, वरिष्ठ नागरिक तथा अन्य अनेक लोगों ने कार्यक्रम का लाभ लिया तथा इसकी सराहना की।

गीता ज्ञान न केवल सुनने के लिए, बल्कि जीवन में धारण करने के लिए

कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. नेहा, ब्र.कु. विद्या तथा अतिथिगण।

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के चोपड़ापाड़ा सेवाकेन्द्र द्वारा परसडिहा में ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. वी.के. सिंह, स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कं. लि. के अधीक्षण अभियंता जी.एल. चंद्रा, एस.डी.ओ. बी.एस. पाठक उपस्थित रहे। गीता पाठशाला के उद्घाटन के साथ ही पाँच दिवसीय गीता ज्ञान यज्ञ शिविर का भी आयोजन किया गया। जिसमें सिवनी से आईं ब्र.कु. नेहा ने बताया कि सर्वशास्त्रमई गीता ऐसा धर्म शास्त्र है जो मनुष्य की मनोस्थिति को शक्तिशाली बना देने वाला है। यह गीता मनुष्य के हित के लिए भगवान ने गाई है। जब मनुष्य की मनोस्थिति कमज़ोर हो जाती है तब ये गीता औषधि का काम करती है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार स्नान करने से शरीर का मैल धुल जाता है, उसी प्रकार भगवद् गीता का ज्ञान सुन कर उसे अपने जीवन में धारण से पाप खत्म हो जायेंगे। जिस प्रकार अर्जुन हर कार्य को कृष्ण से पूछकर करते थे, उसी प्रकार हमें भी हर कार्य परमात्मा की श्रीमत प्रमाण करना चाहिए।

इस ज्ञान यज्ञ शिविर के समापन अवसर पर सभी से बुराइयों को स्वाहा कराया गया।

तत्पश्चात् सरगुजा संभाग संचालिका ब्र.कु. विद्या ने पाँच दिवसीय राजयोग अनुभूति शिविर कराकर सभी को ध्यान मग्न कर दिया।

'स्वर्णिम युग के लिए वैश्विक ज्ञान' थीम पर कार्यक्रम

जम्मू। सेवाकेन्द्र द्वारा 'ग्लोबल एनलाइटमेंट फॉर गोल्डन एज' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सांसद जुगल किशोर शर्मा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ ने समाज से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, घृणा, बदला लेने की भावना जैसी बुराइयों को उखाड़ फेंकने का जो प्रयास किया है, ये सराहनीय है। ये संस्था पूरी शक्ति और विश्वास के साथ भ्रष्टाचार, अधर्म और हिंसा से मुक्त एक नये युग, स्वर्णिम युग की स्थापना का कार्य कर रही है।

रविन्द्र रैना,भाजपा अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक ने कहा कि मैंने आज यहां सीखा है कि हम लागों, समाज, देश और फिर दुनिया को बदलने की बात करते हैं, लेकिन ये तब तक संभव नहीं है जब तक हम खुद को नहीं बदलते।

मनीष शर्मा,पूर्व वाइस चेयरपर्सन,जैकफेड ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ समाज के हर क्षेत्र में कार्य कर रहा है। दुनिया को बदलने की दिशा में ये प्रयास निश्चित रूप से शानदार रंगों के साथ बाहर आयेगा। ये संस्था एक नये युग, स्वर्णिम युग की स्थापना हेतु स्वयं के परिवर्तन और जीवन में दिव्य गुणों को लागू करने का काम कर रहा है। राजयोगिनी ब.कु. आशा, निदेशिका, ओ.आर.सी. गुरूग्राम ने कहा कि हमारी खुशी और दुःख के बीज हमारे अपने विचार के अलावा अन्य कुछ नहीं है। जीवन में खुशी प्राप्त करने के लिए खुद को जानने की और अपने दिमाग को पूरे दिन चलने वाले विचारों की गुणवत्ता के बारे में शिक्षित करने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा, इंसान वो है, जो वो सोचता है।

कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सांसद जुगल किशोर शर्मा, भाजपा अध्यक्ष रविन्द्र रैना, ब्र.कु. रविन्द्र, ब्र.कु. आशा बहन तथा ब्र.कु. सुदर्शन बहन ।

ब्र.कु. कुसुम लता ने कॉमेन्ट्री के माध्यम से सभी को राजयोग की गहन अनुभूति कराई। क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. सुदर्शन ने मेहमानों का स्वागत किया और अपने आशीर्वचन से सभी को लाभान्वित किया। पूर्व में छोटे बच्चों द्वारा स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों ने भाग लिया। सभी ने 'स्वर्ण युग के लिए वैश्विक ज्ञान' विषयक ब्रह्माकुमारीज़ के इस अनूठे प्रयास की सराहना की।

मंच सचिव ब्र.कु. रविन्दर ने सभी को धन्यवाद किया।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Jan 2019
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।